कक्षा 12
भूगोल

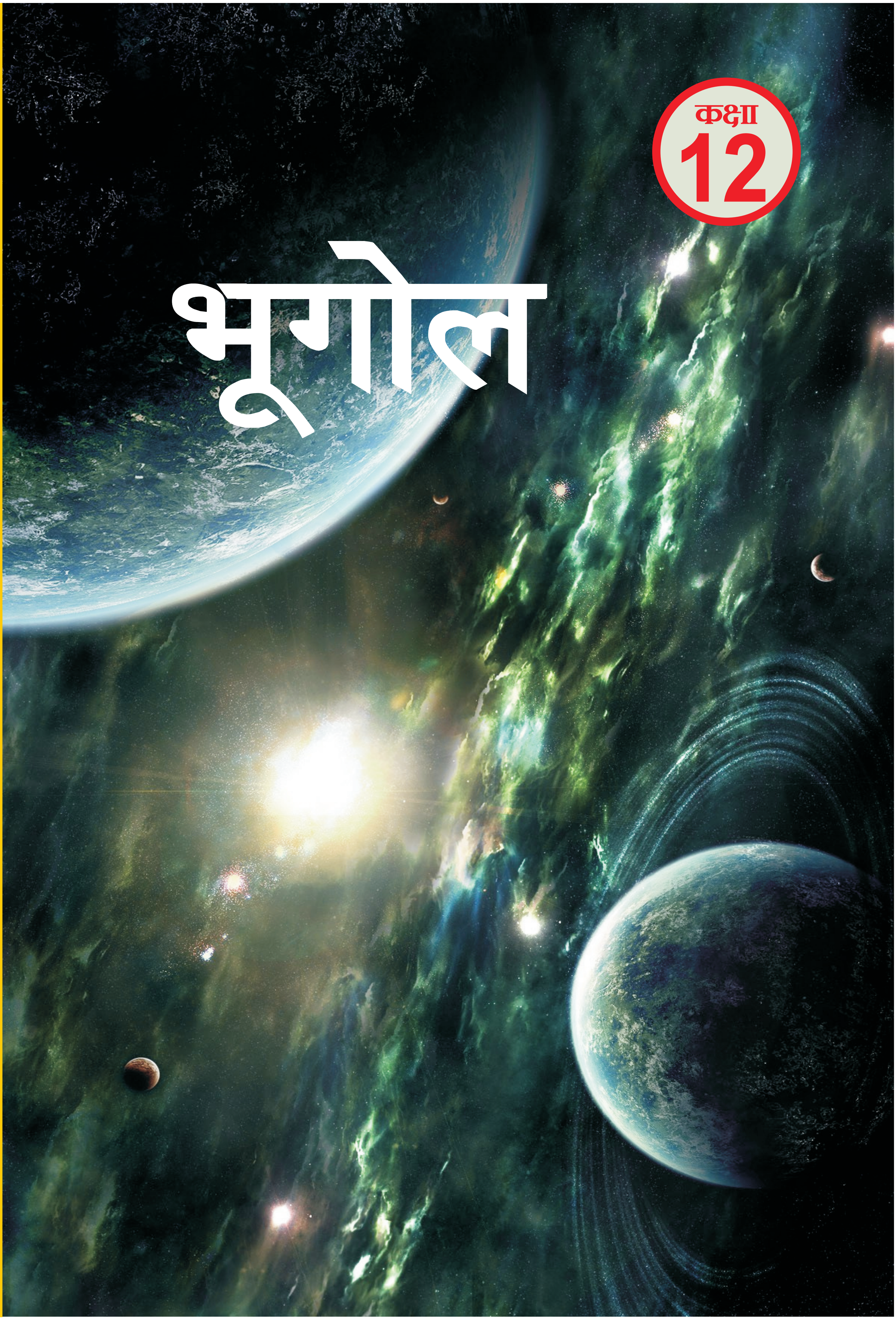

कक्षा 12

भूगोल

भूगोल

कक्षा–12

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक : भूगोल

कक्षा – 12

संयोजक :– डॉ. सतीश आचार्य, व्याख्याता भूगोल
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

लेखकगण :–

1. डॉ० कन्हैयालाल गुर्जर, प्राध्यापक भूगोल
राजकीय महाविद्यालय, टोंक

2. डॉ. सावन कुमार जांगीड़, प्राध्यापक भूगोल
मा.ला. वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा

3. श्री ओमप्रकाश शर्मा, प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिवपुरा, कोटा

4. श्री दिलीप कुमार चौहान, प्राध्यापक भूगोल
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, अजमेर

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पुस्तक : भूगोल
कक्षा – 12

संयोजक :– डॉ. ओ.पी. देवासी, व्याख्याता
राजकीय महाविद्यालय, जोधपुर

सदस्य :–

1. डॉ. नरपत सिंह राठौड़, प्राचार्य
गुरुनानक कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

2. डॉ. मिलन यादव, व्याख्याता
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

3. डॉ. प्रमोद शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर
ज. रा. रा. संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

4. डॉ. पंकज दीक्षित, प्रधानाचार्य
राजकीय उ. मा. विद्यालय, मानसर खेड़ी, जयपुर

5. श्री ओमप्रकाश शर्मा, प्रधानाचार्य
राजकीय उ. मा. विद्यालय, लबानिया सांगोद, कोटा

6. श्री पन्नालाल शर्मा, व्याख्याता
आदर्श राजकीय उ. मा. विद्यालय, लबानिया सांगोद, कोटा

दो शब्द

विद्यार्थी के लिए पाठ्यपुस्तक क्रमबद्ध अध्ययन, पुष्टीकरण, समीक्षा और आगामी अध्ययन का आधार होती है। विषय-वस्तु और शिक्षण-विधि की दृष्टि से विद्यालयी पाठ्यपुस्तक का स्तर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है। पाठ्यपुस्तकों को कभी जड़ या महिमामण्डित करने वाली नहीं बनने दी जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तक आज भी शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया का एक अनिवार्य उपकरण बनी हुई है, जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

पिछले कुछ वर्षों में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम में राजस्थान की भाषागत एवं सांस्कृतिक स्थितियों के प्रतिनिधित्व का अभाव महसूस किया जा रहा था, इसे दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार द्वारा कक्षा-9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा अपना पाठ्यक्रम लागू करने का निर्णय लिया गया है। इसी के अनुरूप बोर्ड द्वारा शिक्षण सत्र 2016-17 से कक्षा-9 व 11 तथा सत्र 2017-18 से कक्षा-10 व 12 की पाठ्यपुस्तकें बोर्ड के निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर ही तैयार कराई गई हैं। आशा है कि ये पुस्तकें विद्यार्थियों में मौलिक सोच, चिंतन एवं अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करेंगी।

प्रो. बी.एल. चौधरी
अध्यक्ष
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

प्रस्तावना

अध्ययन की दृष्टि से भूगोल एक लोकप्रिय एवं प्राचीन विषय है। आज इस विषय का अध्ययन विद्यालय, विश्वविद्यालय स्तर पर सम्पूर्ण विश्व में किया जाता है।

पृथ्वी तल पर पायी जाने वाली समानताओं, विभिन्नताओं का अध्ययन भूगोल की विषयवस्तु है। मानव भूगोल, भूगोल की प्रमुख शाखा है। पृथ्वी मानव का आवास है। मानव भूगोल में मानव वातावरण के सम्बन्धों का अध्ययन महत्वपूर्ण है। देश एवं काल के सन्दर्भ में पर्यावरणीय सम्बन्धों में भी परिवर्तन आया है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को मानव भूगोल के विभिन्न पहलुओं की स्पष्ट जानकारी मिले, इसलिए इस पुस्तक को दो खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड–अ का नाम 'मानव भूगोल के मूल तत्व' है। इसमें मानव भूगोल के इतिहास, जनजातियों, विश्व जनसंख्या, मानव प्रवास, अधिवास, व्यवसाय परिवहन व व्यापार के साथ–साथ पर्यावरणीय समस्याओं से सम्बन्धित पहलूओं की जानकारी हेतु 6 इकाईयों के 12 अध्याय है। इस खण्ड में मानवीय पक्षों का वर्णन वैश्विक सन्दर्भ में किया गया है।

खण्ड–ब का नाम 'भारत जनसंख्या एवं अर्थव्यवस्था' रखा गया है। इस खण्ड की 4 इकाईयों के 10 अध्यायों में भौगोलिक पक्षों की जानकारी भारतीय सन्दर्भ में प्रदान की गई है। अंतिम इकाई के 3 अध्याय राजस्थान राज्य की भौगोलिक सन्दर्भ की जानकारियों पर वर्णित है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में मानव भूगोल सम्बंधी विषयवस्तु की स्पष्टता हेतु लेखको ने विभिन्न उदाहरणों, मानचित्रों, रेखाचित्रों, चित्रों एवं सांख्यिकीय तथ्यों का सहारा लिया है।

पुस्तक की भाषा शैली सरल एवं बोधगम्य रखी गयी है ताकि छात्र भूगोल के मूल भावों को समझ सकें। मैं अपनी ओर से इस पुस्तक के सभी लेखकों को हार्दिक धन्यवाद और कृतज्ञता प्रकट करता हूं, जिनके अथक प्रयासों से यह ज्ञान यज्ञ पूर्णता को प्राप्त कर पाया। इस कार्य में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सहयोग, सुझाव देने वाले समस्त महानुभावों को भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। उत्कृष्टता एवं भूगोल को पुष्ट करने वाले सभी सकारात्मक सुझावों को स्वागत रहेगा।

संयोजक

पाठ्यक्रम

खण्ड (अ) मानव भूगोल के मूल तत्व कुल अंक = 28

1. मानव भूगोल का परिचय – 04

(क) मानव भूगोल – परिभाषा, प्रकृति, विषय क्षेत्र एवं महत्व।

(ख) विश्व की प्रमुख जनजातियाँ –एस्किमी, बुशमैन गौड़, भील जनजातियों का वितरण, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएं।

2. विश्व की जनसंख्या– 06

(अ) जनसंख्या – वितरण, धनत्व को प्रभावित करने वाले कारक।

(ब) जनसंख्या वृद्धि – कारण, समस्या, एवं समाधान, जनसंख्या – संक्रमण सिद्धान्त।

(स) जनसंख्या संरचना – आयुवर्ग, लिगांनुपात, ग्रामीण– नगरीय।

(द) प्रवास– संकल्पना, प्रकार, पक्ष एवं समस्याएँ।

(य) मानव विकास संकल्पना।

(3.) विश्व में मानव अधिवास 04

(अ) अधिवास – ग्रामीण एवं नगरीय अधिषासों के प्रकार एवं प्रतिरूप एवं समस्याऐं।

(ब) नगरीय कच्ची बस्ती की समस्याऐं एवं समाधान

(स) मुम्बई की धारावी कच्ची बस्ती की केस स्टेड़ी।

(4) विश्व में मानव व्यवसाय – 06

(क) प्राथमिक व्यवसाय – परिचय, कृषि, खनन, आखेट, पशुपालन, संग्रहण, मत्स्य, आदिम संग्रहण।

(ख) द्वितीयक व्यवसाय – संकल्पना, उद्योगों के प्रकार, औधोगिक अवस्थिति के कारक, कृषि आधारित उद्योग, विनिर्माण।

(ग) तृतीयक व्यवसाय – चतुर्थक व्यवसाय एवं पंचम व्यावसाय की संकल्पना।

(5.) विश्व में परिवहन, संचार, एवं व्यापार 04

(क) भूतल परिवहन – प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय सड़क एवं रेलमार्ग।

(ख) जल परिवहन – प्रमुख आन्तरिक एवं महासागरीय जलमार्ग, बन्दरगाह, स्वेज एवं पनामा नहर जलमार्ग।

(ग) वायु परिवहन – विश्व के प्रमुख वायुमार्ग एवं हवाई अडड़े महत्व।

(ध) पाइप लाईन परिवहन –विश्व की प्रमुख तेल व गैस पाइप लाइन्स।

(ड) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं भारत की भूमिका।

(र) आधुनिक जनसंचार के उपकरण –उपग्रह, इन्टरनेट, मोबाइल आदि।

(6.) पर्यावरण 02

(अ) पर्यावरणीय समस्याऐं – प्रदूषण, अम्ल वर्षा, हरित गृह प्रभाव, ओजोन परत में क्षरण।

(ब) वैश्विक पर्यावरणीय सम्मेलन।

(7.) मानचित्र कार्य – विश्व का मानचित्र। 02

खण्ड (ब) भारत जनसंख्या एवं अर्थव्यवस्था अंक–28

(1.) भारत जनसंख्या 05

(क) वितरण, धनत्व, जनसंख्या वृद्धि एवं पहलू।

(ख) जनसंख्या संरचना – ग्रामीण व नगरीय, लिगांनुपात आयुवर्ग व साक्षरता।

(ग) प्रजातिय तत्व, भाषायी वर्ग, धार्मिक संरचना, भारतीय संस्कृति पर विदेशी प्रभाव।

(2.) संसाधन 05

(क) संसाधन – वर्गीकरण, संरक्षण, व पोषणीय विकास।

(ख) अजैविक संसाधन – भू संसाधन जल, खनिज (लोहा) तांबा, एल्यूमिनियम, अभ्रक)

(ग) जैविक संसाधन – पशुधन, वन, व मतस्य।

(ध) ऊर्जा संसाधन – परम्परागत – कोयला, पेट्रोलियम, जल विद्युत।

गैर परम्रागत – आणविक ऊर्जा, जैविक ऊर्जा, पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा।

(3) कृषि विनिर्माण उद्योग एवं परिवहन 05

(क) कृषि प्रकार :– निर्वहन व व्यापारिक कृषि, आर्द्र व शुष्क कृषि, गहन व विस्तीर्ण कृषि, जैविक कृषि। उद्यानिकी।

(ख) मुख्य फसलें :– गेंहूँ, चावल, कपास, गन्ना, चाय, वितरण एवं उत्पादन।

(ग) उद्योग – भारत में औद्योगिक विकास, प्रमुख उद्योग – लोहा, इस्पात एवं एल्यूमिनियम,सीमेंट, सूती वस्त्र व चीनी उद्योग। इन्जीनियरिंग उद्योग।

(घ) परिवहन तन्त्र – स्थल, जल, वायु, एवं तेल व गैस पाइप लाइन्स।

(4) विकास व नियोजन 04

(क) विकास व नियोजन – प्रमुख योजनायें एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन।

(ख) क्षेत्रीय नियोजन – प्रादेशिक असन्तुलन–मरू विकास कार्यक्रम। जनजातीय विकास

कार्यक्रम, पर्वतीय विकास कार्यक्रम।

(ग) विकास व नियोजन – गरीबी उन्मूलन व रोजगार कार्यक्रम। मनरेगा की भूमिका व प्रभाव।

(ध) सतत् विकास – परम्रागत एवं आधुनिक दृष्टिकोण।

(5) जनसंख्या एवं अर्थव्यवस्था (राजस्थान) 07

(क) ग्रामीण विकास – डेयरी, गौ पालन, व कुटीर उद्योग।

(ख) प्रमुख उद्योग – सूती वस्त्र, सीमेन्ट।

(ग) खनिज – तांबा, जस्ता, चांदी, मार्बल, टंगस्टन एवं जिप्सम, एवं पैट्रोलियम।

(ध) प्रमुख सिंचाई परियोजनायें :– चम्बल, इन्दिरा गांधी व माही परियोजना।

(च) राजस्थान में पेयजल की समस्या एवं योजना जनसंख्या वितरण धनत्व एवं लिङ्गानुपात जनजातियाँ।

6. मानचित्र कार्य– भारत 02

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
खण्ड 'अ' मानव भूगोल के मूल तत्व		**1**
1	मानव भूगोल : प्रकृति व विषय क्षेत्र	2–6
2	विश्व की प्रमुख जनजातियाँ	7–17
3	जनसंख्या : वितरण, घनत्व एवं वृद्धि	18–31
4	विश्व जनसंख्या संरचना	32–37
5	जनसंख्या : प्रवास एवं मानव विकास	38–44
6	विश्व : मानव अधिवास	45–55
7	मानव व्यवसाय : प्रमुख प्रकार	56–62
8	प्राथमिक व्यवसाय	63–73
9	द्वितीय व्यवसाय	74–84
10	विश्व : परिवहन एवं संचार	85–103
11	विश्व : अंतर्राष्ट्रीय व्यापार	104–110
12	पर्यावरणीय समस्याएँ एवं समाधान	111–124
खण्ड 'ब' भारत जनसंख्या एवं अर्थ व्यवस्था		**125**
13	भारत : जनसंख्या वितरण, घनत्व एवं वृद्धि	126–136
14	भारत : जनसंख्या संरचना	137–149
15	संसाधनों का वर्गीकरण, संरक्षण एवं पोषणीय विकास	150–156
16	जैविक एवं अजैविक संसाधन	157–179
17	ऊर्जा संसाधन	180–194
18	कृषि	195–214
19	उद्योग	215–232
20	परिवहन	233–247
21	भारत में नियोजन	248–259
22	नियोजन एवं सतत् विकास	260–268
23	सिंचाई एवं पेयजल	269–277
24	राजस्थान : खनिज व उद्योग	278–289
25	राजस्थान : जनसंख्या व जनजातियाँ	290–300

खण्ड ''अ'' :

मानव भूगोल के मूल तत्त्व

पाठ 01
मानव भूगोल : प्रकृति व विषय क्षेत्र
(Human Geography : Nature and Scope)

मानव भूगोल : अर्थ व परिभाषा

मानव भूगोल को भूगोल की आधारभूत शाखा माना गया है। भूगोल क्षेत्र वर्णनी विज्ञान है, जिसमें क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य मे तथ्यो का अध्ययन किया जाता है। भूगोल एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में समाकलनात्मक आनुभाविक, एवं व्यावहारिक है, जिसमें किसी घटना का स्थान व समय के सन्दर्भ में भौगोलिक ढंग से अध्ययन किया जाता है। भूगोल पृथ्वी को मानव का घर समझते हुये उन सभी तथ्यों का अध्ययन करता है जिन्होनें मानव को पोषित किया है। इसमें प्रकृति व मानव के अध्ययन पर जोर दिया गया है। ये दोनों अविभाज्य तत्त्व है और इन्हें समग्रता में देखा जाना चाहिये। इन दोनों आधारभूत घटकों से सम्बन्धित भूगोल की क्रमशः दो अलग–अलग शाखाएँ विकसित हुई है। भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल। भौतिक भूगोल भौतिक पर्यावरण का अध्ययन करता है। मानव भूगोल भौतिक पर्यावरण व सांस्कृतिक पर्यावरण के बीच सम्बन्ध, मानवीय परिघटनाओं के स्थानिक वितरण एवं संसार के विभिन्न भागों में सामाजिक और आर्थिक विभिन्नताओं का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में मानव भूगोल मानव वर्गों और उनके वातावरण की शक्तियों, प्रभावों तथा प्रतिक्रियाओं के पारस्परिक कार्यात्मक सम्बन्धों का प्रादेशिक आधार पर किया जाने वाला अध्ययन है। कविता की इन पंक्तियों के माध्यम से मानव भूगोल को निम्न प्रकार से समझ सकते है–

''मानव भूगोल मे मानवीय तथ्यों का अध्ययन आता है।
यह मानव पर्यावरण के मध्य अन्तर्सम्बन्धों को बताता है।।
कृषि, पशुपालन, उद्योग, व्यवसाय किए जो जाते है।
परिवहन, संचार और व्यापार इसके अंदर आते है।।''

मानव भूगोल का प्रादुर्भाव और विकास मुख्यतः 18वीं शताब्दी से माना जाता है। समय के साथ मानव–वातावरण सम्बन्धों में आये बदलाव को ध्यान में रखते हुए कई विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से मानव भूगोल की परिभाषा दी है। कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ अग्रलिखित है :

आधुनिक मानव भूगोल के जन्मदाता जर्मन भूगोलवेत्ता फ्रेडरिक रेटजेल, के अनुसार ''मानव भूगोल मानव समाजों और धरातल के बीच सम्बन्धों का संश्लेषित अध्ययन है।'' रेटजेल ने यह परिभाषा अपनी पुस्तक एन्थ्रोपो–ज्योग्राफी मे दी। उन्होने पार्थिव एकता पर जोर देते हुए मनुष्य के क्रियाकलापो पर वातावरण के प्रभाव का वर्णन किया।

रेटजेल की शिष्या व प्रसिद्ध अमेरिकन भूगोलवेत्ता एलन सैम्पल के अनुसार ''मानव भूगोल चंचल मानव और अस्थायी पृथ्वी के पारस्परिक परिवर्तनशील सम्बन्धो का अध्ययन है।''

एलन सैम्पल नियतिवाद की कट्टर समर्थक थी तथापि उनकी परिभाषा अन्य नियतिवादियों की अपेक्षा अधिक विस्तृत है। मानव अपने विकास की प्राथमिक अवस्था प्रारम्भ से ही सक्रिय रहा है, उसके समस्त क्रिया–कलापो का प्रभाव वातावरण पर पड़ता है।

विडाल डी ला ब्लाश, एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी मानव भूगोलवेत्ता थे। जिन्होनें संभववाद की नींव रखी। उनके अनुसार, ''मानव भूगोल पृथ्वी और मानव के पारस्परिक सम्बन्धो को एक नया विचार

देता है। जिसमें पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियमों तथा पृथ्वी पर निवास करने वाले जीवों के पारस्परिक सम्बन्धो का अधिक संश्लिष्ट ज्ञान शामिल है।''

डिकेन और पिट्स ने मानव भूगोल मे '' मानव और उसके कार्यो को समाविष्ट किया है।''

सारांश परिभाषा– मानव भूगोल वह विज्ञान है जिसमें पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों मे मानव समूहों के प्राकृतिक व सांस्कृतिक वातावरण की शक्तियों, प्रभावों व प्रतिक्रियाओं के पारस्परिक सम्बन्धों और स्थानिक संगठन का अध्ययन, मानवीय प्रगति के उद्‌देश्यों से प्रादेशिक आधार पर किया जाता है।

मानव भूगोल की प्रकृति

प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता जीन ब्रून्श के अनुसार ''जिस प्रकार अर्थशास्त्र का सम्बन्ध कीमतों से, भू–गर्भशास्त्र का सम्बन्ध चट्‌टानों से, वनस्पतिशास्त्र का सम्बन्ध पौधों से, मानवाचार–विज्ञान का सम्बन्ध जातियों से तथा इतिहास का सम्बन्ध समय से है, उसी प्रकार भूगोल का केन्द्र बिन्दु स्थान है। जिसमे 'कहाँ' व 'क्यो' जैसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया जाता है।''

पृथ्वी पर जो भी मानव निर्मित दृश्य दिखाई देते हैं उन सबका अध्ययन मानव भूगोल के अन्तर्गत आता है। अतः विषय की प्रकृति में मानवीय क्रिया कलाप केन्द्रीय बिन्दु है। मानवीय क्रियाकलापों का विकास कहाँ, कब व कैसे हुआ आदि प्रश्नों को भौगोलिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना ही मानव भूगोल की प्रकृति को प्रकट करता है।

मानव भूगोल विभिन्न प्रदेशों के पारिस्थितिक –समायोजन और क्षेत्र संगठन के अध्ययन पर विशेषतः केन्द्रित रहता है। मानव भूगोल में यह विश्लेषण किया जाता है कि पृथ्वी के किसी क्षेत्र में रहने वाला मानव समूह अपने जैविक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास के लिए वातावरण का उपयोग किस प्रकार करता है और वातावरण में क्या–क्या बदलाव लाता है। मानव भूगोल जनसंख्या, प्रदेशों और संसाधनों की व्यूह रचना करता है। मानव अपने पर्यावरण के अनुसार क्रियाकलापों व रहन–सहन में अनुकूलन रूपान्तरण व समायोजन करता है। इस प्रकार हम देखते है कि मानव भूगोल क्षेत्र विशेष में समय के साथ मानव व वातावरण के सभी जटिल तथ्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन मानव को केन्द्रीय भूमिका मे मानकर करता है।

मानव –भूगोल का विषय क्षेत्र

मानव भूगोल में भिन्न–भिन्न प्रदेशों की (i) जनसंख्या (ii) वहाँ के प्राकृतिक संसाधनों (iii) सांस्कृतिक भूदृश्यों व जीवन की मान्यताओं (iv) पारस्परिक सम्बन्धो का अध्ययन मानव की उन्नति के उद्धेश्य से होता है। हंटिंगटन ने मानव भूगोल के अध्ययन क्षेत्र को दो वर्गो मे बाँटा है– (i) भौतिक दशाएँ और (ii) मानवीय अनुक्रिया।

मानव भूगोल का विषय क्षेत्र व्यापक है। सारांश में मानव भूगोल के अन्तर्गत विषय क्षेत्र के निम्न प्रमुख तथ्यों को सम्मिलित किया जाता है।

1. जनसंख्या व उसकी क्षमता
2. प्रदेश के प्राकृतिक संसाधन
3. सांस्कृतिक वातावरण
4. कालिक अनुक्रम
5. समायोजन व प्रादेशिक संगठन
6. दूसरे प्रदेशों से सम्बन्ध

मानव भूगोल के विषय क्षेत्र के विभिन्न पहलूओं को आरेख 1.1 के माध्यम से दर्शाया गया है।

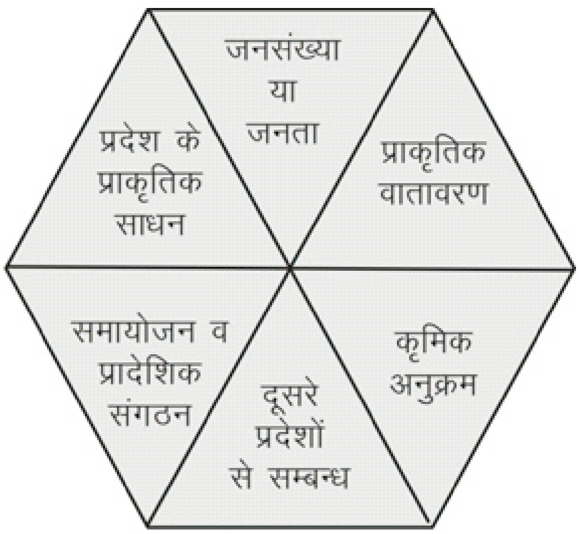

आरेख 1.1 : मानव भूगोल का अध्ययन क्षेत्र

मानव भूगोल के विषय–क्षेत्र के मुख्य पहलूओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

1. जनसंख्या

मानव भूगोल जनसंख्या के वितरण प्रारूप, जनसमूहों, प्रवास, अधिवास तथा उसकी प्रजातिगत सामाजिक संरचना का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे विवेचन करता है।

2. प्रदेश के प्राकृतिक संसाधन

प्राकृतिक वातावरण के विभिन्न तत्त्वों का अध्ययन तथा मानव क्रियाकलापों पर इन तत्त्वों के प्रभाव का अध्ययन किया

जाता है। इसमें प्राकृतिक संसाधन, भूमि जल, वन, खनिज का अध्ययन सम्मिलित होता है।

3. सांस्कृतिक वातावरण

पृथ्वी पर जो भी दृश्य मनुष्य की क्रियाओं द्वारा बने हुये दिखाई पड़ते है, वे सब मानव भूगोल के अध्ययन में शामिल है। सांस्कृतिक तत्त्व मानव व पर्यावरण के अन्तर्सम्बन्ध को प्रकट करते है। अतः सांस्कृतिक तत्वों के अन्तर्गत जीव जन्तुओं एवं मानव का वातावरण के साथ अनुकूलन, जीविका के साधन, परिवहन, भवन निर्माण सामग्री, अधिवास आदि सम्मिलित हैं।

4. कालिक अनुक्रम

मानव समाज और उसके भौगोलिक सम्बन्ध स्थिर नहीं है। यह सभी सम्बन्ध क्रियात्मक है। मानव के सॉंस्कृतिक विकास के साथ–साथ उत्तरोतर अधिक गत्यात्मक व लोचपूर्ण होते जाते हैं।

5. समायोजन व प्रादेशिक संगठन

भूगोलवेत्ता को केवल इतना ही नहीं मालूम करना होता है कि पृथ्वी तल पर मानवीय दशाएँ किस प्रकार वितरित है, वरन् यह भी जानना आवश्यक है कि उनका वितरण उस विशेष ढंग से क्यों है। उपर्युक्त विभिन्नताएँ या तो प्राकृतिक वातावरण के कारण होती है या मानवीय क्रियाओ के कारण होती है। मनुष्य ने पृथ्वी पर अपनी छाप अपनी क्रियाओं द्वारा कैसे लगायी है?का अध्ययन भी मानव भूगोल में किया जाता है। संसाधनों का समाज के विभिन्न वर्गो मे वितरण, उनका उपयोग तथा संरक्षण भी मानव भूगोल का महत्त्वपूर्ण विषय क्षेत्र है। मानव भूगोल के अध्ययन का दूसरा पक्ष भविष्य के परिप्रेक्ष्य में मानव वातावरण तंत्र का अध्ययन करना है। असन्तुलित विकास के कारण प्रकृति असंतुलित होती जा रही है। आज वातावरण अवनयन व प्रदूषण की समस्याएँ बढ़ती जा रही है। अतः वातावरण नियोजन भी मानव भूगोल के अध्ययन क्षेत्र का अभिन्न अंग हो गया है।

6. अन्य प्रदेशों से सम्बन्ध

पृथ्वी पर मानव एकाकी नहीं है, उसके पृथ्वीतल पर फैले विभिन्न क्षेत्रों से आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक सम्बन्ध भी होते हैं। उसके इन सम्बन्धों का अध्ययन भी मानव भूगोल में होता है।

मानव भूगोल का विकास

पृथ्वी की सतह पर पर्यावरण के साथ अनुकूलन व समायोजन की प्रक्रिया तथा इसका रूपान्तरण मानव के अभ्युदय के साथ ही आरम्भ हो गया था। यदि हम मानव व वातावरण की पारस्परिक क्रियाओं से मानव भूगोल के प्रारम्भ की कल्पना करें तो इसकी जड़ें इतिहास के संदर्भ में अत्यन्त गहरी है। अतः मानव भूगोल के विषयों में एक दीर्घ कालिक सांतत्य पाया जाता है। समय के साथ विषय को स्पष्ट करने वाले उपागमों में परिवर्तन आया है। यह विषय की परिवर्तनशील प्रकृति को दर्शाता है। अध्ययन की दृष्टि से मानव भूगोल के विकास को तीन युगों में विभक्त किया जाता है।

1. प्राचीन काल

प्राचीन काल मे विभिन्न समाजों के बीच अन्योन्य क्रिया न्यून थी। एक दूसरे के बारे मे ज्ञान सीमित था। तकनीकी विकास का स्तर निम्न था तथा चारों तरफ प्राकृतिक वातावरण की छाप थी। भारत, चीन, मिश्र, यूनान व रोम की प्राचीन सभ्यताओं के लोग प्राकृतिक शक्तियों के प्रभाव को मानते थे। वेदों में सूर्य, वायु, अग्नि, जल, वर्षा आदि प्राकृतिक तत्त्वों को देवता मानकर पूजा अर्चना की जाती थी। यूनानी दार्शनिक थेल्स व एनैक्सीमेंडर ने जलवायु वनस्पति व मानव समाजों का वर्णन किया। अरस्तु ने वातावरण के प्रभाव की वजह से ठण्डे प्रदेशों के मानव को बहादुर परन्तु चिंतन में कमजोर बताया जबकि एशिया के लोगों को सुस्त पर चिंतनशील बताया। इतिहासकार हैराडोट्स ने घुमक्कड़ जातियों तथा स्थायी कृषक जातियों के जीवन पर वातावरण के प्रभाव का उल्लेख किया। हिकेटियस ने विश्व के बारे में उपलब्ध भौगोलिक ज्ञान को व्यवस्थित रूप में रखने के कारण उन्हें भूगोल का जनक कहा जाता है। स्ट्रेबो व उसके समकालीन रोमन भूगोलवेत्ताओं ने मानव व उसकी प्रगति के स्तर पर भू– पारिस्थितिकीय स्वरूपों के प्रभाव को स्पष्ट किया।

2. मध्यकाल

इस काल में नौ चालन सम्बन्धी कुशलताओं व अन्वेषणों तथा तकनीकी ज्ञान व दक्षता के कारण देशों तथा लोगों के विषय में मिथक व रहस्य खुलने लगे। उपनिवेशीकरण और व्यापारिक रूचियों ने नये क्षेत्रों में खोजों व अन्वेषणों का विश्व ज्ञानकोषिय विवरण प्रकाश में आया। इस काल में अन्वेषण, विवरण व प्रादेशिक विश्लेषण पर विशेष जोर रहा। प्रादेशिक विश्लेषण में प्रदेश के सभी पक्षों का विस्तृत वर्णन किया गया। मत यह था कि सभी प्रदेश पूर्ण इकाई व पृथ्वी के भाग है। इस प्रदेशों की समझ पृथ्वी को पूर्ण रूप में समझने में सहायता करेगी।

3. आधुनिक काल

इस काल की शुरूआत जर्मन भूगोलवेत्ताओं हम्बोल्ट, रिटर, फ्रोबेल, पैशेल, रिचथोफेन व रेटजेल ने की। फ्रांस में मानव भूगोल का सबसे अधिक विकास हुआ। रेटजेल, विडाल–डी–ला–ब्लांश,

ब्रूंस, दी मार्तोन, डिमांजियाँ व फ्रेब्रे नें मानव भूगोल पर कई ग्रंथ लिखे। अमेरिका व ग्रेट ब्रिटेन में भी मानव भूगोल का तेजी से विकास हुआ। अमेरिका में एलन सैम्पल, हटिंगटन, बौमेन,कार्ल सॉवर, ग्रिफिफ्थ टेलर एवं ब्रिटेन में हरबर्टसन, मैकिण्डर, रॉक्सबी तथा फ्लुअर ने मानव भूगोल के विकास में विशेष योगदान दिया। 20वीं सदी में मानव भूगोल का विकास सभी देशों में हुआ।

फ्रेडरिक रेटजेल जिन्हें आधुनिक मानव भूगोल का संस्थापक कहा जाता है ने मानव समाजों एवं पृथ्वी के धरातल के पारस्परिक सम्बधों के संश्लेशणात्मक अध्ययन पर जोर दिया। इस काल के प्रारम्भिक दौर में मानव वातावरण सम्बन्धों का नियतिवादी, संभववादी व नवनियतिवादी विचारधाराओं के अनुसार अध्ययन किया गया। नियतिवाद मे प्रकृति व संभववाद में मानव को अधिक प्रभावी माना। 21वीं सदी के आरम्भ में नव नियतिवाद के अनुसार दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों में सामंजस्य पर जोर दिया गया। यह विचार धारा 'रूको व जाओ' के नाम से भी जानी जाती है। नवनियतिवाद के प्रर्वतक ग्रिफिक्थ टेलर थे।

1930 के दशक में मानव भूगोल का विभाजन 'सांस्कृतिक भूगोल' एवं आर्थिक भूगोल के रूप में हुआ । विशेषीकरण की बढ़ती प्रवृति के कारण मानव भूगोल की अनेक उप–शाखाओं जैसे राजनैतिक भूगोल, सामाजिक भूगोल, चिकित्सा भूगोल का उद्भव हुआ।

दोनों विश्व युद्धों के मध्य की अवधि में क्षेत्रीय विभेदन के अध्ययनों पर विशेष ध्यान दिया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के दो दशको में मानव भूगोल की विषय वस्तु में स्थानिक संगठन उपागम द्वारा विभिन्न मानवीय क्रियाओं के प्रतिरूपों की पहचान करना रहा था।

मात्रात्मक क्रांति से उत्पन्न असंतुष्टि के चलते 1970 के बाद मानव भूगोल में अनेक दार्शनिक विचारधाराओं का प्रभुत्व रहा। मानव कल्याण परक विचारधारा का सम्बन्ध लोगों के सामाजिक कल्याण के विभिन्न पक्षों से हैं। इसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास जैसे पक्ष शामिल है। क्रान्तिकारी विचारधारा ने निर्धनता के कारण, बंधन और सामाजिक असमानता के लिए मार्क्स के सिद्धान्त का अनुसरण किया। समकालीन सामाजिक समस्याओं का सम्बन्ध पूँजीवाद के विकास को माना। आचरणपरक विचारधारा के अनुसार मनुष्य आर्थिक क्रियाएँ करते समय हमेशा आर्थिक लाभ पर ही विचार नहीं करता बल्कि उसके अधिकाँश निर्णय यथार्थ पर्यावरण की अपेक्षा मानसिक मानचित्र (आचरण पर्यावरण) पर आधारित होते है। विचारों में बदलाव आंशिक रूप से विश्लेषण के मापदण्डो में परिवर्तन के कारण आते है। 21 वीं सदी में मानव भूगोल में सामान्य निकाय सिद्धान्त तथा मानवीय दशाओं की व्याख्या करने वाले वैश्विक सिद्धान्तों की उपादेयता पर प्रश्न उठने लगे है। अब अपने आप में प्रत्येक स्थानीय संदर्भ की समझ के महत्त्व पर जोर दिया जा रहा है। इस प्रकार मानव भूगोल निरन्तर विकास के साथ गतिशील भी रहा है। समय के साथ इसका महत्त्व, अध्ययन क्षेत्र की व्यापकता व अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध बढ़ रहे हैं। आज भूगोल की महत्त्वपूर्ण इस शाखा का अध्ययन सम्पूर्ण विश्व में किया जा रहा है।

महत्वपूर्ण बिन्दू

1. भूगोल क्षेत्र वर्णनी विज्ञान है, जिसमें क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य मे तथ्यो का अध्ययन किया जाता है।
2. भूगोल की दो मुख्य शाखाएँ है– भौतिक भूगोल व मानव भूगोल हैं।
3. मानव भूगोल वह विज्ञान है जिसमें पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में मानव समूहों के प्राकृतिक व सांस्कृतिक वातावरण की शक्तियों का, प्रभावों का, प्रतिक्रियाओं के पारस्परिक संबंधों और स्थानिक संगठनों का अध्ययन किया जाता है।
4. मानव भूगोल क्षेत्र विशेष में समय के साथ मानव–वातावरण के सभी जटिल तथ्यों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन मानव को केन्द्रिय भूमिका में मानकर करता है।
5. हंटिंगटन ने मानव भूगोल के अध्ययन क्षेत्र को दो वर्गों भौतिक दशाएँ व मानवीय अनुक्रिया में बाँटा है।
6. समय के साथ मानव भूगोल विषय के स्पष्ट करने वाले उपागमों में परिवर्तन आया है।
7. मानव भूगोल के विकास को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन युगों में बॉटा गया है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक

1. आधुनिक मानव भूगोल के जन्मदाता कौन थे?
   (अ) हम्बोल्ट (ब) रिटर
   (स) रेटजेल (द) हंटिंगटन
2. ''मानव भूगोल चंचल मानव और अस्थायी पृथ्वी के पारस्परिक परिवर्तनशील सम्बन्धो का अध्ययन है।'' परिभाषा किसने दी?
   (अ) रेटजेल (ब) ऐलन सेम्पुल
   (स) ब्लाशॅ (द) कार्ल सावर

3. नवनियतिवाद के प्रर्वतक कौन हैं?

(अ) ग्रिफिथ टेलर (ब) ब्लाशॅ

(स) मैकिण्डर (द) हरर्बटसन

4. निम्न में से कौन फ्रॉसिसी भूगोलवेत्ता नहीं है?

(अ) ब्लाशॅ (ब) ब्रूशॅ

(स) डिमांजियॉ (द) रिटर

अतिलघूत्तरात्मक

5. मानव भूगोल के त्रि–संतुलन के घटकों के नाम बताइए।
6. रेटजेल की पुस्तक का नाम बताइए।
7. संभववाद विचारधारा किसने दी?
8 प्राचीन सभ्यताओं के प्रमुख केन्द्रों के नाम बताइए।

लघूत्तरात्मक

9. मानव भूगोल के पॉच उप–क्षेत्रों के नाम बताइए।
10. मानव भूगोल की प्रकृति को समझाइए।
11. मध्यकाल में मानव भूगोल के विकास को समझाइए।

निबन्धात्मक

12. मानव भूगोल के विषय क्षेत्र का वर्णन कीजिये।
13. आधुनिक काल में मानव भूगोल के विकास को समझाइए।

पाठ 02
विश्व की प्रमुख जनजातियाँ
(Major Tribes of The World)

पृथ्वी पर मानव को रहते हुए लाखों वर्ष बीत चुके है। इस लम्बे काल में मानव ने प्राकृतिक वातावरण के साथ समायोजन करना सीखा है। मानव ने तकनीकी विकास के साथ–साथ वातावरण समायोजन में तीव्र गति से परिवर्तन किया है। विश्व मे आज भी कुछ ऐसे क्षेत्र है जिनमें कई जनजातियाँ आदिम ढंग से अपना जीवन यापन कर रही है। उनकी जीवन शैली में विशेष बदलाव नहीं आया है। इस प्रकार की जनजातियाँ शीत प्रदेशों, घने जंगलों, उष्ण व शुष्क मरूस्थलों, घास के मैदानों एवं दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करती है। इनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति, सामाजिक ढाँचा, परम्पराएँ, रीति–रिवाज व मान्यताएँ है। इस जनजातियों की अर्थव्यवस्था का आधार खाद्य संग्रहण, आखेट, घुमक्कड़, पशुचारण व आदिम ढंग की निर्वाहन कृषि है। ये विभिन्न प्राकृतिक दशाओं में प्राचीन काल के मानव व वातावरण के सम्बन्ध की सूचक है। आधुनिक विकसित सभ्यताओं से इनका सम्पर्क लगभग नगण्य है।

जनजातियाँ वास्तव में जैविक समूह का नहीं वरन् सामाजिक व सांस्कृतिक समूह का प्रतिनिधित्व करतीं है। जनजाति लोगों का वह समूह है जो सामाजिक रीति– रिवाजों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं द्वारा एक दूसरे से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है। विश्व की प्रमुख जनजातियाँ निम्न है :–

1. ध्रुवीय व ठण्डे प्रदेशों के निवासी
   – एस्किमों, सैमोयड्स जनजाति।
2. विषुवत् रेखीय सघन वनों के निवासी
   – पिग्मी, सेमांग, सकाई जनजाति।
3. उष्ण व शुष्क कालाहारी मरूस्थल के निवासी
   – बुशमैन जनजाति।
4. उष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्रों के निवासी
   – मसाई व बद्दू जनजाति।
5. सम शीतोष्ण कटिबन्धीय घास क्षेत्रों के निवासी
   – खिरगीज जनजाति।
6. दुर्गम पहाड़ी व पठारी क्षेत्रों के निवासी
   – भील, गौंड, संथाल, मीणा, नागा व अन्य जनजातियाँ।

इस अध्याय में हम विश्व की एस्किमों, बुशमैन तथा भारत की भील व गौंड़ जनजातियों का विस्तार से अध्ययन करेगें।

एस्किमो (Eskimos)

आर्कटिक प्रदेश में मानव आज भी विकास की प्रारंभिक अवस्था में है। आखेट, मछली पकड़ना व संग्रहण एस्किमों की आजीविका का मुख्य आधार है। एस्किमों का शब्दिक अर्थ 'कच्चा माँस खाने वाला' तथा बर्फीले प्रदेश के निवासी के रूप में होता है।

चित्र 2.1 : एस्किमो जनजाति की महिला

एस्किमों जनजाति मंगोल प्रजाति से सम्बन्धित है। एस्किमों का चेहरा सपाट व चौड़ा, त्वचा का रंग–पीलापन लिए भूरा, बाल–भद्दे व काले, कद–मझला, नाक–चपटी, आँखे–गहरी, कत्थई व तिरछी होती है। इनका जबड़ा भारी, मुँह–चौड़ा तथा दाँत सफेद व मजबूत होते है। शरीर हष्ट –पुष्ट व पुट्ठे माँसल होते हैं।

ये घोर संकट काल में भी अपनी स्थिरता, गम्भीरता व विवेक को अडिग बनाये रखते है। ये स्वभाव से सरल व हँसमुख प्रकृति के लोग है।

(i) निवास क्षेत्र

एस्किमों जनजाति प्रारम्भ से ही आर्कटिक व टुण्ड्रा प्रदेशों तक ही सीमित है। इस क्षेत्र में अलास्का से लेकर बेरिंग जल डमरूमध्य तक इनका विस्तार है। ये अलास्का, कनाडा, ग्रीनलैण्ड व उत्तरी साइबेरिया क्षेत्रों में रहते है। विस्तृत टूण्ड्रा प्रदेश में निवास करने वाले लोगों को उत्तरी कनाड़ा व ग्रीनलैण्ड मे एस्किमों, स्कैण्डिनेविया मे लैप्स तथा उत्तरी साइबेरिया मे सैमोयड्स याकूत, चकची व तुंग नाम से जाना जाता है। मानचित्र 2.1 में इस जनजाति के निवास क्षेत्रों को दर्शाया गया है।

निम्न तापमान, बर्फीली आँधियाँ व कम रोशनी युक्त तथा कठोर जलवायु में लगभग 10 लाख एस्किमों विगत दस हजार वर्षों से रह रहे हैं। इस प्रदेश में जाड़े की ऋतु बहुत लम्बी व ग्रीष्म ऋतु बहुत छोटी होती है। वार्षिक औसत तापमान 0° सैल्शियस से भी नीचे रहता है। पेड़ो के अभाव में यहाँ बर्फ की आंधियाँ चलती है। वर्षा हिम के रूप मे होती है। कठोर जलवायु के कारण वनस्पति का अभाव रहता है। केवल ग्रीष्म काल की अल्प अवधि में शैवाल, काई,

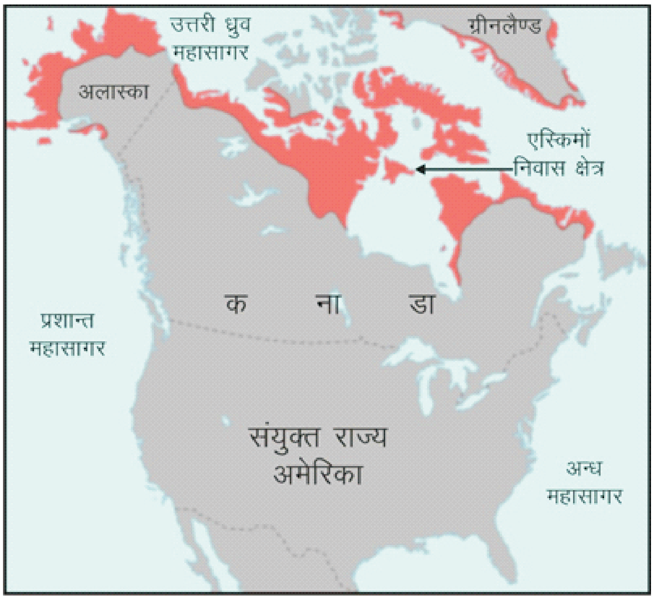

मानचित्र 2.1 : एस्किमों जनजाति का निवास क्षेत्र

लाइकेन आदि रंग–बिरंगे फूलों की वनस्पति उग आती है। ध्रुवीय भालू, लैमिंग, खरगोश, कस्तूरी–मृग, कैरीबाऊ (रेण्डियर), लोमड़ी, भेड़िये, कुत्ते आदि इस क्षेत्र के प्रमुख प्राणिजात है। समुद्र में सील, ह्वेल, वालरस (सी लॉयन) जैसी विशालकाय मछलियाँ पाई जाती है।

(ii) आर्थिक क्रिया–कलाप

(अ) आखेट : शिकार करना एस्किमो के जीविकोपार्जन का एक मात्र साधन है। ये शीत काल व ग्रीष्म काल में विभिन्न विधियों से शिकार करते हैं।

शीतकालीन आखेट – इस ऋतु में एस्किमों समुद्री तट के किनारे सील मछली का शिकार करते है। जब मछली बर्फ में बने छिद्रों मे श्वास लेने आती है तब एस्किमों द्वारा रखी हड्डी की छड़ हिल जाती है। एस्किमो अपने हथियार हारफून से सील मछली का शिकार करते है। इसे माउपाक कहते है। माउपाक जिसका शाब्दिक अर्थ ''प्रतीक्षा करना'' होता है। शिकार की दूसरी विधि इतुरपाक है। जिसके अन्तर्गत शिकारियों द्वारा दो छिद्र बनाये जाते है। एक छिद्र में एक व्यक्ति सील को चारा डालकर बुलाता है तथा दूसरे छिद्र में दूसरा व्यक्ति संकेत मिलते ही हारफून से शिकार कर लेता है। सील मछली न केवल भोजन प्रदान करती है वरन् जलाने के लिए ईंधन भी देती है। सील की चर्बी अन्य जीवों की चर्बी की तुलना में तुरन्त व अधिक देर तक जलती है और ताप भी अधिक देती है। चित्र 2.1 में महिला द्वारा माउपाक विधि से तथा चित्र 2.2 में हारफून से खुले समुद्र में बसन्तकालीन आखेट को समझ सकते हैं।

बसन्तकालीन आखेट – मार्च में सील मछलियाँ श्वास लेने हेतु बाहर आकर धूप सेकनें लगती है, उनका शिकार किया जाता है। बंसतकालीन आखेट को उतोक कहते है। ये शिकारी

चित्र 2.2 : कयाक और हारफून से एस्किमों द्वारा मछली का शिकार

कुत्तों की मदद से सील मछलियों का शिकार करते है। इस ऋतु मे चमड़े से बनी नाव को परिवहन के लिए काम मे लेते है। जिसे कयाक कहते है। ग्रीष्मकाल में एस्किमो लोग कैरिबो (बाहरसिंगो) का धनुष– बाण से शिकार करते है। खरगोश, बतख व चिड़ियों का शिकार हल्के भाले से फैंक कर करते है। रेण्डियर–सम्पत्ति व सामाजिक स्तर का मापदण्ड भी है। एस्किमों लोगों के जीवन में सील मछली का अत्यधिक महत्त्व है। सील से खाने के लिए माँस, कपड़े बनाने के लिए खाल, तम्बू बनाने के लिए खाल, ईधन के लिए चर्बी, स्लेज गाड़ी बनाने के लिए हड्डियाँ तथा धागे के रूप मे ताँत प्राप्त होती है।

(ब) भोजन – कच्चा माँस इनका प्रमुख भोजन है। भोजन का स्त्रोत सील, ह्वेल, सी लॉयन है। छोटी मछलियो व स्थलीय जीव–जन्तुओं से भी भोजन प्राप्त होता है।

(स) वस्त्र – एस्किमों के वस्त्र मुख्यतः कैरिबो की खाल से बने होते है। यह सील मछली की खाल की अपेक्षा अधिक गर्म एवं हल्के होते है। ध्रुवीय भालू के समूर से भी वस्त्र बनाये जाते है। वस्त्र बनाने का कार्य स्त्रियाँ करती है। स्त्री व पुरूष दोनों के वस्त्र एक समान ही होते है। एस्किमों जर्सीनुमा बॉहदार वस्त्र जिसे तिमियाक कहते है, पहनते है। तिमियाक के ऊपर पहने जाने वाले कपड़े को अनोहाक कहते है। सील की खाल से बने जूतों को कार्मिक या मुक्लूक्स कहते है।

(द) निवास गृह – इनके मकान बर्फ, पत्थर, हड्डियों तथा खालों से बने होते हैं। शीतकाल में बर्फ के मकान को 'इग्लू' कहते है (चित्र 2.3)। 5–6 फिट भूमिगत व 2–3 फीट ऊपर उठे लकड़ी व हवेल की हड्डियों के ढाँचे से बने मकान को कर्मक

चित्र 2.4 : एस्किमों जनजाति के अस्थाई आवास

(Karmak) कहते है। इसका प्रवेश द्वारा एक भूमिगत सुरंग से जुड़ा होता है। ग्रीष्म काल में शिकार के दौरान ये लोग अस्थायी तम्बू में रहते है (चित्र 2.4)।

(य) यंत्र व उपकरण –

कयाक – चमड़े से बनी एक प्रकार की नाव जो 5 मीटर लम्बी तथा 1.5 मीटर चौड़ी होती है।

ऊमियाक – बड़ी नाव जो ह्वेल मछली के शिकार के दौरान काम में ली जाती है।

हारफून– सील मछलियों के शिकार के लिए प्रयुक्त 1.2 से 1.5 मीटर लम्बा भालानुमा हथियार जो रस्सी से बंधा होता है।

स्लेज – बर्फ पर चलने वाली पहिये विहीन गाड़ी जिसे कुत्ते व रेण्डियर खींचते है। चित्र 2.5 में एस्किमों की स्लेजगाड़ी को रेण्डियर खींच रहे हैं।

(iii) समाज व संस्कृति

ये लोग छोट–छोटे समूहों में रहते है। इनका जीवन घुमक्कड़ है। आदिम ढंग से जीवन यापन करते है। पितृवंशीय समाज है। इनमें बहुपत्नी प्रथा प्रचलित है। ग्रीष्मकाल में कई

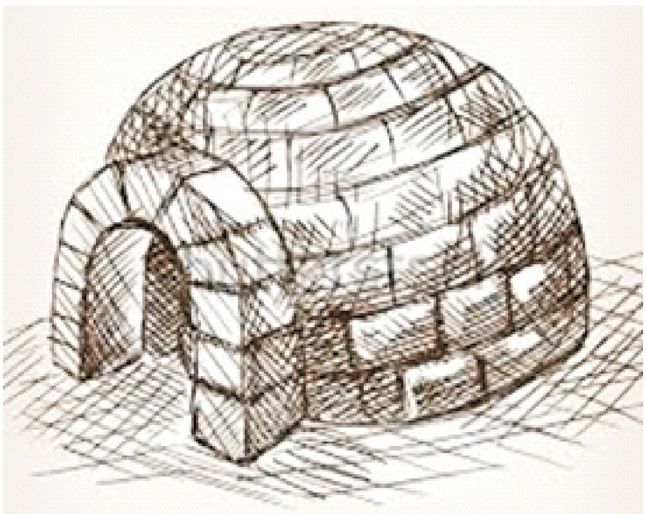

चित्र 2.3 : इग्लू : एस्किमों का बर्फ का घर

चित्र 2.5 : एस्किमों की स्लेज गाड़ी को खींचते रेण्डियर

उत्सव व समारोह मनाएँ जाते है। एस्किमों लोग जादू टोनों में भी विश्वास रखते है। ये एस्किमो–एल्यूट भाषा बोलते है। कठोर शीत ऋतु में भोजन की कमी होने पर बूढ़ें व अशक्त व्यक्ति आत्महत्या करते हैं।

(iv) वातावरण समायोजन

एस्किमों दुर्गम, सामान्य मानव के जीवन की कल्पना से परे कठोर जलवायु में एस्किमों जनजाति में वातावरण समायोजन की दक्षता अपने आप में एक अनूठा उदाहरण है। एस्किमों हिम का ही प्रयोग कर हिम निवास (इग्लू) बनाते है। स्लेज गाड़ी बनाने के लिए वालरस की हड्डियों को काम में लेते है। हिम झंझाओं तथा हिम पर सूर्य की किरणों के पड़ने से होने वाली चमक से आँखो को बचाने के लिए आँख कवच का उपयोग करते हैं।

(v) आधुनिक संस्कृति से सम्पर्क

एकाकी ध्रुवीय प्रदेशों में निवास करने वाली इस जनजाति का 1960 के पश्चात् यूरोपियन व अमेरिकी लोगों से सम्पर्क बढ़ा है। अब ये लोग आग्नेय अस्त्रों, बन्दूक आदि का प्रयोग करने लगे है। कयाक के स्थान पर मोटर चालित नाव व स्लेज के स्थान पर स्नो स्कूटर का प्रयोग बढ़ा है। पारम्परिक वातावरण का रूपान्तरण तीव्र गति से होने लगा है। फर, समूर आदि के व्यापार से मुद्रा मिलने से उनके पहनावे व रहन–सहन की विधियों मे भी बदलाव आया है।

अमेरिकी सरकार द्वारा प्रदत्त स्वास्थ्य सुविधाओं के बढ़ने व भरण–पोषण सरल होने से एस्किमों लोगों की जनसंख्या कनाड़ा व अलास्का में निरन्तर बढ़ रही है। इनकी संख्या वृद्धि से टुण्ड्रा के तटीय क्षेत्रों के पर्यावरण पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। संभव है कि 21 वीं शताब्दी में एस्किमों का जनजातीय परिवेश मात्र ऐतिहासिक रह जाये।

बुशमैन (Bushman)

लगभग 20 हजार वर्षों से अफ्रीका के कालाहारी मरूस्थल में फैले बुशमैन सॉन, रव्वी, व बसारवा के नाम से जाने जाते है। ये संख्या मे लगभग 10 हजार रह गये है। परम्परागत रूप से ये 20 अथवा उससे कम के समूह मे विचरण करते है। ये मुख्यतः आखेटक व खाद्य–संग्रहक है।

ये लोग नाटे कद के होते हैं तथा निग्रीटो प्रजाति के समरूप है। इनके जबड़े तथा मोटे होठ बाहर निकले हुये नहीं होते है। इनकी आँखें चौड़ी नहीं होती है। इनके नितम्ब बहुत भारी होते है।

(i) निवास क्षैत्र

बुशमैन लोगों का निवास क्षेत्र अफ्रीका महाद्वीप में 18 डिग्री दक्षिणी अक्षांश से 24 डिग्री दक्षिणी अक्षांश के मध्य बेचुआनालैण्ड में स्थित है। पशु जनित भोजन की आपूर्ति में यह प्रदेश अधिक घनी है। आज बुशमैन मुख्यतः कालाहारी मरूस्थल और दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका के उपोष्ण घास के मैदानी भागों में फैले है। ये दक्षिणी अफ्रीका, बोत्सवाना, नामिबिया व अंगोला देशों में निवास करते है। मानचित्र 2.2 में बुशमैन जनजाति के निवास क्षेत्र को दर्शाया गया है।

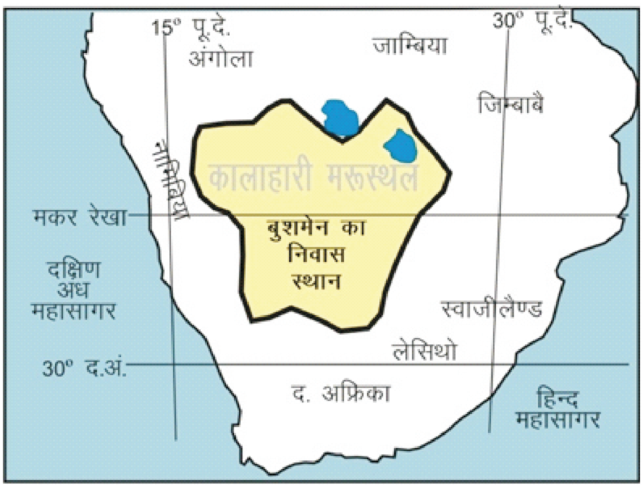

मानचित्र 2.2 : बुशमेन जनजाति का निवास सीान

कालाहारी मरूस्थल का धरातल उबड़–खाबड़ है। यहाँ की जलवायु अर्द्ध उष्ण कटिबंधीय है। यहाँ वर्षा का औसत 25 सेमी से भी कम है। तापमान वर्ष भर ऊँचा रहता है परन्तु रातें अपेक्षाकृत ठण्डी रहती है। यहाँ ग्रीष्म काल लम्बा तथा शीतकाल बहुत छोटी अवधि का होता है।

बुशमैन निवास क्षेत्र में घास के मैदान व कंटीली झाँड़ियाँ पायी जाती है। शुष्क क्षेत्रों में एक प्रकार का तरबूज (त्यामा) होता है, जिसे जल पूर्ति के लिए मानव व पशु सभी चाहते है। यहाँ अनेक प्रकार के शाकाहारी व माँसाहारी प्राणिजात पाये जाते है। कई तरह के हिरण, बड़े कोदू, स्टेन बॉक, ग्नू खरगोश, जिराफ, शुतुरमुर्ग, जेबरा, जंगली बिल्ली, वन बिलाव, लकड़बग्घा और सियार आदि पाये जाते है। प्रसिद्ध एटोशा राष्ट्रीय उद्यान भी इसी प्रदेश में अवस्थित है।

(ii) आर्थिक क्रिया–कलाप

(अ) आखेट – बुशमैन मूल रूप से आखेटक है। ये तीर–कमान व भाले से शिकार करते है। बड़े शिकार को जाल में फँसाने के लिए विभिन्न तरीके काम में लेते है। ये शिकार को कीचड़ मे घँसाकर, फंदो में फँसाकर, गड्डो में गिराकर व विषाक्त जल पिलाकर मारते है। प्रत्येक परिवार स्वयं अपना भोजन प्राप्त

चित्र 2.6 : बुशमैन द्वारा आखेट

करता है। ये लोग जन्तुओं की बोली की नकल करने मे निपुण होते है।

(ब) भोजन – बुशमैन सर्वभक्षी होते है। वे खाते भी ज्यादा है। एक बुशमैन आधी भेड़ तक एक बार में खा जाता है। शिकार मछली, पौधो की जड़े, बैरी तथा शहद इनके भोजन के मुख्य अंग है। दीमक, चीटियाँ और उनके अण्डे इनके प्रिय भोज्य पदार्थ हैं। ये लोग इस बात की परवाह नहीं करते कि इनका भोजन ताजा है या बासी। उष्ण जलवायु के कारण भविष्य के लिए भोजन को संचित करने पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

(स) वस्त्र – बुशमैन के वस्त्र बहुत कम होते है। पुरूष एक तिकोनी लंगोट पहनता है। जिसकी नोक टांगो के बीच होकर पीछे की ओर जाती है। स्त्रियाँ सामने व पीछे की ओर कमर से बाँधकर चमड़े की चौकोर एप्रन लटका कर पहनती है। स्त्रियों के वस्त्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वस्त्र चोंगा होता है। जिसे स्थानीय भाषा मे क्रोस कहा जाता है। यह वस्त्र व बिस्तर बंद दोनों ही होता है। इसी क्रास में वे अपने शिशु एवं संग्रहित वस्तुओं को लपेट कर

चित्र 2.7 : बुशमैन जनजाति के आवास

लाती है। बुशमैन चमड़े की टोपी व जूतों कों भी काम में लेते है।

(द) निवास गृह – ये चट्टानी गुफाओं में शरण लेते है। खुले मे कड़ी टहनियों, घास व जानवरों की खालों से गुम्बदाकार झोपड़ी बनाते है। बुशमैन लोगो के अल्पकालीन गाँव वेर्फ में लगभग 8 से 10 झोपड़ियाँ होती है।

(य) औजार व बर्तन – तीर–कमान, नुकीला डंडा, भाला, बर्छा, अग्निदण्ड इनके प्रमुख औजार हैं। ये बिष बुझे तीरों का प्रयोग करते है। शुतुरमुर्ग और जिराफ के पैर की हड्डियों को घिसकर नुकीला बनाकर तीर के अग्र भाग पर लगाते है। तीर–कमान से लगभग 60 मीटर की दूरी पर स्थित शिकार को भी मार सकते है। पेड़ों के छालों से रस्से बनाते है। चित्र 2.8 में बुशमैन द्वारा प्रयुक्त विभिन्न औजार प्रदर्शित हैं।

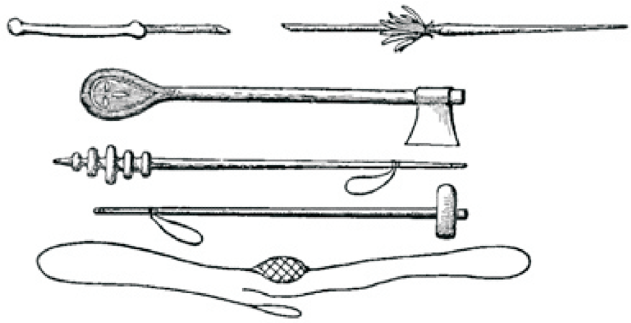

चित्र 2.8 : बुशमैन जनजाति के शिकार के औजार

इनके पास बर्तन बहुत कम होते हैं। शुतुरमुर्ग के अण्डों का उपयोग जल रखने व आभूषण बनाने में करते है। हिरण की खाल की थैली व लकड़ी के प्याले अन्य बर्तन है।

(iii) समाज व संस्कृति

सामाजिक समुदाय के अन्तर्गत बुशमैन लोगो का एक छोटा सा दल होता है। बुशमैन की धार्मिक परम्पराओं, संस्कारों व कलाओ में प्राणियों व प्रकृति का केन्द्रीय स्थान होता है। ये लोग जादू–टोना तथा भूत–प्रेतों में विश्वास करते है। बुशमैन दो भगवानों में विश्वास करते है। एक जो पूर्व में रहता है तथा दूसरा जो पश्चिम में रहता है। ओझा इन्हें बीमारियों व प्रेतात्माओं से बचाता है। इनकी चट्टानों पर की गयी पैंटिंग सर्व प्रसिद्ध है। वर्तमान में अण्डों की खोल के आभूषण, तीर–कमान, स्कर्ट आदि इनकी प्रमुख क्रॉफ्ट वस्तुएँ हैं।

(iv) वातावरण समायोजन

इनमें जीवित रहने की शक्तिशाली चेतना पायी जाती है। थोड़ा सामान, कम बच्चे तथा अपने सामान के बँटवारे के कारण ये लोग घूमते रहने की अबाधित स्वतंत्रता का उपयोग करते हैं। अकाल के समय बुशमैन स्त्रियाँ गर्भधारण करना बंद कर देती है।

शिकार करते समय शिकार किये जाने वाले पशुओं की जातियों की मादा व अल्प वयस्कों को हानि न पहुँचाने का ध्यान रखते है। ये लोग अग्नि जलाने के लिए कम से कम ईंधन का उपयोग करते है। शिकार किये गए पशु के प्रत्येक भाग को काम मे लेते है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि बुशमैन लोगों ने अपने प्राकृतिक वातावरण से समायोजन कर रखा है।

(v) आधुनिक संस्कृति से सम्पर्क

वर्तमान मे बुशमैन जनजाति के लोगों की जीवन शैली पर बाह्य संस्कृति का प्रभाव पड़ रहा है। आजकल ये आखेट के साथ–साथ जल स्त्रोतों के निकट आदिम निर्वाह कृषि करने लगे है। ये लोग स्थानीय व्यापारियों के साथ वस्तुओं का विनिमय भी करते है। इनके पहनावे में भी भारी बदलाव आया है। बाँटू, हॉटेन्टॉट व यूरोपीय लोगों के आक्रमणों से बुशमैन लोगों की संख्या निरन्तर घटती जा रही हैतथा आवास क्षेत्र संकुचित होते जा रहे हैं।

भील (Bhil)

भील, संथाल व गौंड जनजातियों के बाद भारत में तीसरा सबसे बड़ा जनजाति समूह है। भील शब्द की उत्पत्ति द्राविड़ियन भाषा के 'बीलू' से हुयी है। जिसका अर्थ है तीरंदाज। कुछ लोग भाषायी दृष्टि से इस शब्द की उत्पत्ति संस्कृत में क्रिया के मूल जिसका अर्थ भेदना, वध करना तथा मारना होता है, तीरन्दाजी में इनकी निपुणता के कारण माना जाता है। इनके सम्बन्ध में पुराणों में अनेक संदर्भ उपलब्ध है। भीलों की उत्पत्ति महादेव के पुत्र निषाद से हुयी है। निषाद ने पिता महादेव के बैल नंदी को मार दिया था जिसे दण्ड स्वरूप पर्वतीय क्षेत्रों में निर्वासित कर दिया था। महाभारत महाकाव्य में इनका सम्बन्ध एकलव्य से है। रामायण काल में श्रीराम को शबरी ने सीता की खोज के दौरान दण्डकारण्य वन में बैर खिलाये थे। कर्नल टॉड के अनुसार ये तात्कालीन मेवाड़ राज्य की अरावली पर्वत श्रेणियों में रहने वाले लोग है जिन्होने महाराणा प्रताप की अकबर के विरूद्ध युद्ध में मदद की थी। ऐतिहासिक दृष्टि से इस जनजाति ने डगारिया (डूँगरपुर), बासिया (बाँसवाड़ा), कोटिया (कोटा) तथा देआवा (उदयपुर) पर शासन किया था।

ये लोग नाटे होते है। इनका रंग गहरा काला तथा नाक चौड़ी होती है। आँखे लाल, बाल रूखे, जबड़ा कुछ बाहर निकला होता है। इनका शरीर सुगठित व सुडौल होता है।ये लोग परिश्रमी और ईमानदार होते है। चोरी करने को धार्मिक पाप मानते है। ये आजादी प्रेमी होते है।

चित्र 2.9 : भील जनजाति की महिला

(I) निवास क्षेत्र

भील दुर्गम व निर्जन पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करते है। ये लोग अरावली, विन्ध्याचल व सतपुड़ा की पहाड़ियों और वन क्षेत्रों में रहते है। भारत में भील चार राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात तथा महाराष्ट्र में है। भीलों का मुख्य केन्द्रीकरण राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, व चित्तौड़गढ़, मध्यप्रदेश के धार, झाबुआ व रतंलाम, गुजरात के पंचमहल व बड़ोदरा में तथा महाराष्ट्र के औरंगाबाद, अहमदनगर, जंलगाँव, नासिक व धुले जिलों में है। मानचित्र 2.3 में भील जनजाति के निवास क्षेत्र प्रदर्शित है।

इनके निवास क्षेत्रों की जलवायु मानसूनी है। इनके निवास्य क्षेत्रों में लगभग 33 प्रतिशत भू–भाग पर वन पाये जाते है। अनाच्छादित पहाड़ियाँ, अपरदित मिट्टी व वनों की कटाई ने भीलों की बढ़ती जनसंख्या के सामने अनेक समस्याएँ खड़ी कर दी है।

(ii) आर्थिक क्रिया–कलाप

भील वनों व पहाड़ी प्रदेशों के एकांत प्रदेशों में निवास करने के कारण इनकी आजीविका का मुख्य आधार खाद्य संग्रहण, आखेट, आदिम कृषि व पशुपालन है। ये लोग वनों से (विशेषकर स्त्रियाँ) कंद–मूल, फूल–फल एवं पत्तियाँ एकत्रित करती हैं। जंगली पशुओं व पक्षियों का शिकार करते है। कृषि में खाद्यान्न, साग सब्जियाँ व चारे की फसलें पैदा करते हैं। भेड़–बकरी,

गाय–भैंस व कुक्कड़ पालन करते हैं।

(अ) आखेट – जंगलों मे तीर कमान से ये लोग जंगली पशुओ का शिकार करते है। पुरूष तालाबों से मछली पकड़नें का कार्य भी करते है। पूर्व में ये महान शिकारी थे लेकिन अब ये लोग कृषि भी करने लगे है। लगभग 80 प्रतिशत भील कृषि कार्य करने लगे है। पहाड़ी क्षेत्रों की झूमिंग कृषि को 'चिमाता' तथा मैदानी भाग में की जाने वाली कृषि को 'दजिया' कहते हैं।

(ब) भोजन – वर्षपर्यन्त भीलों का मुख्य भोजन मक्का है। उत्सवों व प्रतिभोज के अवसरों पर चावल (चोखा) व लापसी बनती है। छाछ व आटे को उबाल कर लगभग हर घर में राबड़ी बनाई जाती है। गेहूँ, चना, उड़द, मूँग, व सब्जियाँ भी अब इनके भोजन में शामिल हो गये है। रीति–रीवाजों व परम्पराओं के अनुसार भील माँसाहारी होते है। भील लोग महुआ से निर्मित मंदिरा के अधिक व्यसनी हैं।

(स) वस्त्र – देश की आजादी से पूर्व भीलो के वस्त्र बहुत कम होते थे। पुरूष छाल से बनाकर नेकर तथा स्त्रियाँ पेटीकोट पहनती थी। वर्तमान मे पुरूष कमीज, धौती, साफा या पैंट–शर्ट पहनने लगे है। स्त्रियाँ घाघरा, काँचली व लूगड़ी पहनती है। लड़के लंगोट पहनते है तथा लड़कियॉ घाघरी व ओढ़नी पहनती है। भील चाँदी पीतल, जस्ता व निकिल से बने आभूषण पहनते है। भील स्त्रियाँ अपने–आप को लाख व काँच की चूड़ियों से सजाती व संवारती है।

(द) निवास गृह – इनके घर प्रकीर्ण प्रकार के होते है। झौपड़ियॉ खेत के छोटे टुकड़े के मध्य टीलों पर बनाई जाती है। प्रत्येक झोपड़ी अपने आप में पूर्ण होती है। जिसमें आवास के साथ अन्न भण्डारण व पशुओं को रखने की भी व्यवस्था होती है। घर की दीवारें मिट्टी–पत्थर व बांस से तथा छत खपरैल से बनी होती है। झौपड़ियों की सामने की दीवार को गोबर, खड़िया व लाल गैरू से

चित्र 2.10 : भील जनजाति का आवास

लीप–पोत कर सजायी जाती है। वर्तमान में पक्के मकानों का चलन भी बढ़ा है। अब कुछ भील सघन बस्तियों में भी रहने लगे है। छोटे गाँवों के समूह का फला व बड़े गाँव को पाल कहते हैं। चित्र 2.10 में भील परिवार का आवास प्रदर्शित है।

(य) औजार व बर्तन – धनुष–बाण, तलवार व खंजर इनके प्रमुख अस्त्र –शस्त्र हैं। बाण दो प्रकार के होते है–एक हरियो व दूसरा रोबदो। पक्षियों को पकड़ने के लिए एक प्रकार का फंदा जिसे फटकिया कहा जाता है, काम में लिया जाता है। सम्पन्न भील बदूकों का भी उपयोग करने लगे हैं। भीलो के घरों में मिट्टी से बने बर्तन, मक्का पीसने की चक्की तथा बाँस से बना पालना जरूर पाया जाता है।

(iii) समाज व संस्कृति

भील अनेक पितृसत्तात्मक समूहों व कुलों में संगठित है। प्रत्येक कुल के लोग अलग–अलग गाँवों में रहते है। प्रत्येक कुल का अपना–अपना गण चिह्न होता है। भील युवा हो या वृद्धउसकी पत्नी जरूर होती है। चाहे वह सामान्य विवाह से या भगा कर लायी गयी हो। इनमें बहु–पत्नी प्रथा भी पायी जाती है। सामान्यतयाः विवाह का प्रस्ताव वर पक्ष की ओर से आता है। इनमें कन्या का मूल्य देना पड़ता है, जिसे दापा कहा जाता है। जो लड़के के पिता को देना होता हैं । गोल गाधेड़ों प्रथा के द्वारा कोई भी युवक शूरवीरता व साहस का कार्य दिखलाते हुए शादी हेतु युवती को चुनने का अधिकार पाता है।

ये प्रकृति पूजक है। ये कृषि यंत्रों व उपकरणों की भी पूजा करते है क्योंकि अधिकाँश भील कृषक है। भीलों में बहुत से देवी–देवताओं की पूजा की जाती है। कुछ लोग नागदेव को पूजतें है। ये अंधविश्वासी होते हैं तथा भूत–प्रेतों में विश्वास करतें है। ये मृतकों का दाह–संस्कार करते है।

होली व दीपावली महत्वपूर्ण पर्व है। लम्बे समय तक होली माता के गीत गाते हैं। घूमर व गैर भीलों के प्रमुख नृत्य है। राजस्थान में सोम, जाखम व माही से बनी त्रिवेणी पर भीलों का प्रमुख बेणेश्वर मेला जनवरी–फरवरी माह में लगता है। ये मेला शिव की आराधना हेतु लगता है। ये आग के चारों ओर नृत्य करते है व गीत गाते हैं। रात्रि में लक्ष्मी नारायण मंदिर में रास लीला का आनंद लेते है।

इस जनजाति में ढोल बजाकर आपातकालीन समय में सभी को एकत्रित कर लिया जाता है। फाइरे–फाइरे भीलों का रणघोष है। समस्त पाल का मुखिया 'गमेती' कहलाता है जो एक प्रकार से इनका शासक है। मार्गदर्शक को बोलावा कहते है।

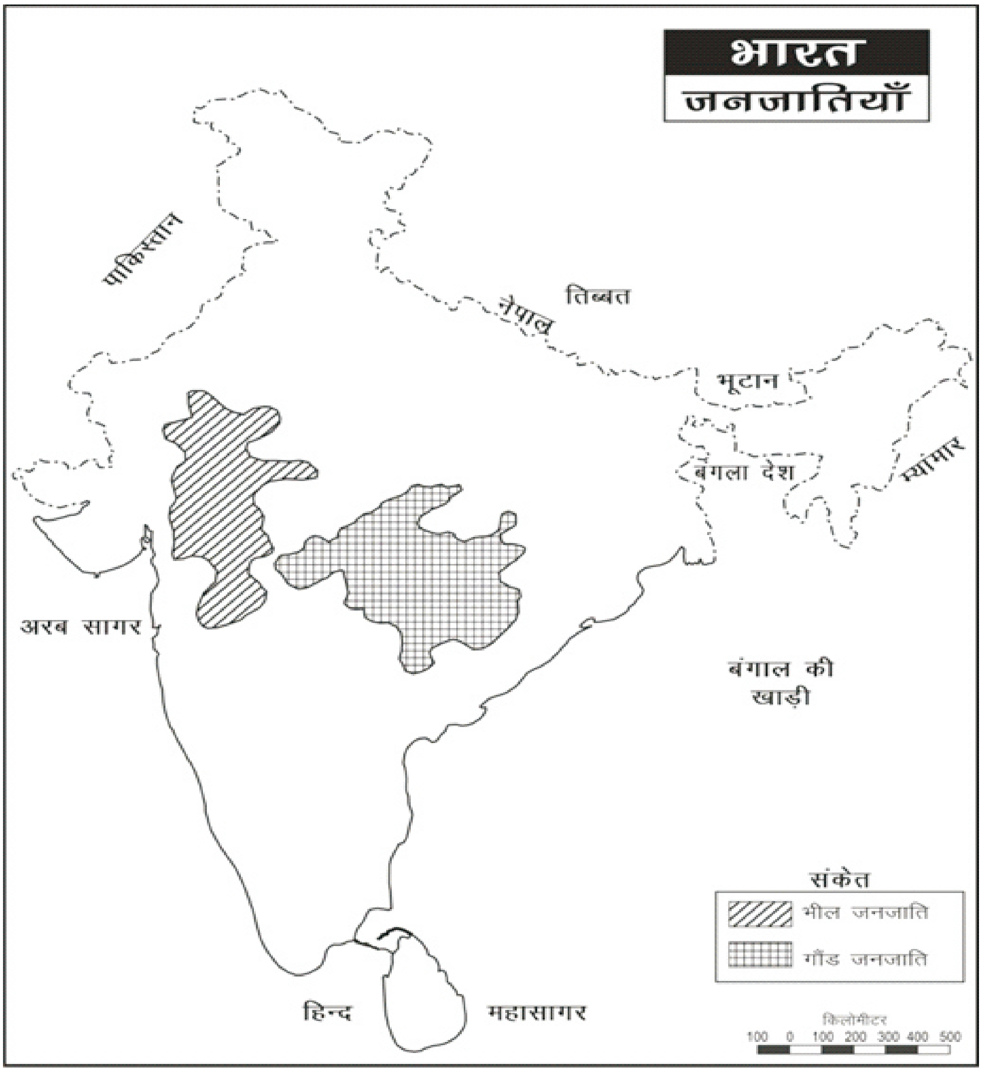

मानचित्र 2.3 : भील एवं गौंड़ जनजाति के निवास क्षेत्र

(iv) आधुनिक संस्कृति से सम्पर्क

वर्तमान में भीलों का सम्पर्क शहरी क्षेत्रों से होने के कारण ये चतुर व चालाक हो गये हैं। अब भील, बाजार आधारित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो रहे है। युवा वर्ग मेहनत मजदूरी करने लगे है। बाह्य संस्कृति के सम्पर्क में आने से इनके पहनावे, बोलचाल व रहन–सहन में तेजी से बदलाव आ रहा है।

सरकारें आदिवासी क्षेत्रों के प्रादेशिक विकास हेतु विद्यालय, चिकित्सालय तथा परिवहन, संचार, बैंकिग की सुविधाएँ उपलब्ध करवा रही हैं। सरकार कुटीर उद्योगों तथा वन व कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा दे रही है। आधुनिक संस्कृति से बढ़ते सम्पर्क के साथ इनकी जीवन शैली में आमूल–चूल परिवर्तन आ रहा है।

गौंड (Gond)

गौंड विश्व का सबसे बड़ा जनजातिय समूह है। भारतीय प्रायद्वीप पर निवास करने वाली जनजाति को गौंड कहा जाता है। गौंड शब्द की उत्पत्ति खोण्डा से हुई है जिसका अर्थ है 'पहाड़ी' । गौंड अपने आप को कोइटुर या कोल भी कहते है। सोलहवीं से मध्य अठारहवीं सदी तक मध्य भारत में गौंडो से शासित चार साम्राज्य गढ़ माण्डला,

देवगढ़, चाँदा व खेड़ला पनपे। मुगलों व 1940 में मराठों के प्रभुत्व के बाद ये हाशिये पर चले गये। वर्तमान में इनका निवास दुर्गम व पहाड़ी क्षेत्रों तक सीमित हो गया।

(i) निवास क्षेत्र

गौंड जनजाति के कई वर्ग मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, तेलंगाना, महाराष्ट्, उड़ीसा व आसाम में रहते हैं। गौंड सतपुड़ा पहाड़ियों, मैकाल श्रेणी, सोन–देवगढ़ उच्च भूमि, बस्तर पठार व गढ़जत पहाड़ियों में रहते हैं। मानचित्र 2.3 में गौंड जनजाति के निवास क्षेत्रों को प्रदर्शित किया गया है। इन पहाड़ियों की ऊँचाई 600 से 900 मीटर के बीच है। इन क्षेत्रों से देश की प्रमुख नदियाँ जैसे नर्मदा, ताप्ती, सोन, महानदी व गोदावरी का उद्‌गम हुआ है। इन क्षेत्रों में सघन वन पाये जाते हैं। ग्रीष्म काल में तापमान 40° सैल्शियस तक हो जाता है। इन क्षेत्रों में वर्षा का औसत 120 सेमी से 160 सेमी के बीच रहता है।

(i) आर्थिक क्रिया–कलाप

ये लोग आत्म निर्भर होते है। इनके जीवन की आवश्यकताएँ बहुत ही साधारण होती है। इन लोगों का मुख्य व्यवसाय झूमिंग कृषि व आखेट है। कुछ वनोत्पाद संग्रह, पशुपालन व मछली पकड़ने का कार्य भी करते हैं। दीप्पा कृषि, झूमिंग कृषि का एक प्रकार है जिसमें भूमि पर दो–तीन वर्ष खेती करने के बाद उसे पड़त छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार की कृषि में पेड़ों व झाड़ियों को जलाकर व भूमि को साफ कर खेत तैयार करते हैं। उसमें फावड़े या हल से कुरेदकर बीजों को छिटककर बोया जाता है। बीज बोने के बाद देवी माता को और जंगल के अन्य देवताओं को पशु बलि दी जाती है। पैंड़ा कृषि मध्य प्रदेश के बस्तर में तीव्र पहाड़ी ढालों पर सीढ़ीदार खेतों पर की जाती है। खेतों में मिट्‌टी की आर्द्रता को बनाये रखने के लिए निचले भागों में लकड़ी के लट्‌ठे रख दिये जाते हैं जिनसे मिट्‌टी का कटाव भी नहीं होता है। कुरूख, केवट और धीवर वर्ग के गौंड मछुआ–कर्म द्वारा जीवनयापन करते हैं। पशुपालन भी किया जाता है। इनमें रावत वर्ग का मुख्य पेशा पशुचारण करना व दूध बेचना है।

(अ) आखेट – ये जानवरों का शिकार करतें है। भारत में आखेट करना अब राजकीय नियमों से निषेध है फिर भी ये लोग कुछ मात्रा में वन्य जीवों का शिकार कर लेते हैं। धीरे–धीरे शिकार का स्थान कृषि ने ले लिया है। अधिकाँश गौंड लोग अब कृषक बन गये हैं।

(ब) भोजन – कोदू व कुटकी जैसे स्थानीय अनाज गौंडों के मुख्य खाद्यान है। सब्जियाँ घरों में उगाकर या जंगलों से प्राप्त करते है । उत्सवों व त्यौहारों पर चावल बनते है। शिकार से प्राप्त

चित्र 2.12 : गौंड जनजाति द्वारा शिकार

व बलि दिये जानवरों का मॉस भी खाते है। गौंड धूम्रपान करते है तथा महुआ से बनी शराब का सेवन भी करते हैं।

(स) वस्त्र व आभूषण – गौंड प्रायः सूती वस्त्र पहनते हैं। पुरूष धोती तथा स्त्रियॉ साड़ी व चोली पहनती है। पुरूष व स्त्रियॉ दोनों चॉदी व एल्युमिनियम के गहने पहनते है। स्त्रियाँ कॉच की रंग बिरंगी चूड़ियाँ व गले में काले मनकों व कोड़ियों से बना हार पहनती हैं। स्त्रियॉ अक्सर शरीर पर गोदना गुदवाती है। चित्र 2.13 में गौंड महिला द्वारा शरीर पर गुदवाया गोदना देख सकते हैं। लड़कियाँ अपने बालों के जूड़े में सफेद बाँस से बने आधे दर्जन तक कंघे रखती है।

(द) निवास गृह – गौंड नंगले अर्थात पल्ली और छोटे–छोटे गॉवों में रहते हैं। जिस स्थान पर आवास बनाना होता है उसका शगुन निकलवा कर उस स्थान पर उत्सव मनाते हैं।

चित्र 2.13 : गौड़ जनजाति द्वारा गोदना

चित्र 2.13 : गौड़ जनजाति द्वारा गोदना

वहाँ बतख या मुर्गे की बलि दी जाती है। इनके मकान घास–फूस व मिट्टी के बने होते हैं जिसमें रहने का कमरा, रसोई, बरामदा व पूजाघर जरूर होता है। चित्र 2.14 में गौंड आवास प्रवेश का उत्सव का दृश्य हैं।

(य) औजार व बर्तन – गौंड लोगों के औजार बहुत साधारण होते है जो स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाये जाते हैं। स्थानीय लुहार फॉलियॉ, खुरपी, फावड़ा, दराती, कुल्हाड़ी व तीरों की नोक आदि बनाते हैं। लकड़ी का सामान ये लोग स्वयं ही बना लेते हैं। गौंड के घरों में कुछ चारपाइयाँ तथा लकड़ी के स्टूल होते हैं। दरियाँ बैठने व सोने के लिए काम में ली जाती हैं।

(iii) समाज व संस्कृति

गौंड पितृसत्तात्मक समाज की रचना में रहते हैं। पिता की मृत्यु के उपरान्त उसकी सम्पूर्ण अचल सम्पत्ति उसके पुत्रों में बॉट दी जाती है। सबसे बुजुर्ग पुरूष परिवार का मुखिया होता है। गौंड लोगों में सेवा विवाह, विनिमय विवाह, हरण विवाह तथा विधवा विवाह का प्रचलन है। इन लोगों में विवाह समारोह किसी प्राकृतिक स्थान जैसे जल स्रोत के निकट अथवा आम के वृक्ष के नीचे किया जाता है। इस अवसर पर अनिष्ट से बचने के लिए रामधुनी का आयोजन किया जाता है। गॉव के मुखिया को पटेल अथवा मुखादम तथा गाँव के चौकीदार को कोतवार के नाम से जाना जाता है। आपसी विवादों का निपटारा गाँव की पंचायत करती है। गाँव के पुजारी व पुरोहित को देबारी कहा जाता है।

गौंडी बोली द्राविड़ियन भाषा परिवार से संबंधित है जिसका सम्बन्ध तमिल व कन्नड़ से है। कई गौंड हिन्दी, मराठी व तेलगु भी बोलते है। साक्षरता का स्तर देश के औसत से बहुत नीचे है। महिला साक्षरता नगण्य है।

गौंड जनजाति के लोग नृत्य व गीतों के साथ पर्व व उत्सव मनाते है। गौंड पूर्णिमा को चाँदनी रात में इकट्ठे होकर गाने व नाचने का पूरा आनंद लेते है। स्त्री व पुरूष दोनों साथ नाचते हैं। धूलियाँ गौंडो की प्रमुख गायक जाति है। प्रधान गौंडो की मान्यताओं व इतिहास को गाकर लोगों को सुनाते हैं। प्रधान की कथानुसार जब गौंड के भगवानों ने जन्म लिया तो उनकी माँ ने उन्हें बेसहारा छोड़ दिया। देवी पार्वती ने उनको सहारा दिया। लेकिन शंभू महादेव ने उनको एक गुफा में कैद कर दिया। गौंडो के नायक पाहेन्डी कपार लिंगम ने देवी जंगू बाई की मदद से उन्हें गुफा से आजाद करवाया। वे चार समूह में गुफा से बाहर आये। तभी से गौंड चार मुख्य वर्गों में बँटे हुए है जिसे गौंडी भाषा में सगा कहते हैं।

गौंड भूतकाल में मुर्गों को आपस में लड़ा कर अपना मनोरंजन करते थे। बड़ा देव, श्री शंभू महादेव व परशा पेन इनके प्रमुख देवता हैं। शीतला माता व छोटी माता देवी की भी पूजा करतें है। ये लोग देवी–देवताओं का प्रसन्न करने के लिए भेड़–बकरियों की बलि देते है। इनमें अनके प्रकार के जादू–टोनों का प्रचलन है। रात्रि जागरण करते है। अधिकांश गौंड हिन्दू है। पर कुछ लोग प्रकृति पूजक है। प्रकृति पूजकों का विश्वास है कि भगवान वनों में निवास करता है।गौंड लोग काली, दंतेश्वरी व बड़ा देव को नर बलि भी देते थे जिसे 19 वीं सदी में अंग्रजों ने प्रतिबंधित कर दिया था। गौंड जनजाति के लोग मृत शरीर को जलाते व दफनातें है। इनका विश्वास है कि आत्मा अजर–अमर है।

(iv) आधुनिक संस्कृति से सम्पर्क

गौंड लोगों के आवास्य क्षेत्रों में औद्योगिक विकास के कारण विगत 30 वर्षों में श्रमिक–कर्म की प्रवृत्ति बढ़ी है। बड़ी संख्या में लोग खदानों व विनिर्माण उद्योगों में श्रमिकों के रूप में कार्य करने लगे है। खनन व निर्माण केन्द्रों के समीप इनकी नई व स्थाई बस्तियाँ बस गई है। इन बस्तियों में अस्पतालों, विद्यालयों, बाजारों, बैंको व पंचायतों की स्थापना हुई है। सड़क व रेल मार्गों के जाल से इनका सम्पर्क शहरों से बढ़ा है। जीवन–शैली में तेजी से बदलाव आ रहा है। पुराने रीति–रिवाज व परम्पराओं की पकड़ ढ़ीली हुयी है। सरकार ने दासता की प्रतीक कबाड़ी प्रथा को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित कर दिया है। इस प्रथा के अनुसार छोटे से कर्ज को चुकाने के लिए ऋणी की कई पीढ़ियों को साहूकारों के गुलामों की भाँति कार्य करना पड़ता था।

शिक्षा का स्तर बढ़नें लगा है। जीवन अधिक सुविधाजनक हो गया है। गौंड़ जनजाति अनुसूचित जनजाति में श्शामिल होने के कारण इन्हें सरकार से कई सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दू

1. जनजातियॉ सामाजिक व सॉंस्कृतिक समूह का प्रतिनिधित्व करती है।
2. जनजातियों की अपनी विशष्ट संस्कृति, सामाजिक ढ़ाँचा, परम्पराएँ, रीति रिवाज व मान्यताएँ होती है।
3. एस्किमों ध्रुवीय व ठण्ड़े प्रदेशों में निवास करने वाली जनजाति है।

4. बुशमैन अफ्रीका के कालाहारी मरूस्थल में निवास करती है।
5. एस्किमों का चेहरा सपाट व चौड़ा, बाल रूखे व काले, कद मझला, नाक चपटी, ऑखे कत्थई, तिरछी व गहरी होती है।
6. एस्किमों हारफून से सील मछली का शिकार करते है।
7. एस्किमों के बर्फ से बने घरों को इग्लू कहते है।
8. बुशमैन सर्वभक्षी व पेटू होते है।
9. बुशमैन मुख्यरूप से आखेटक होते है व कई विधियों से शिकार करते है।
10. भील दुर्गम व निर्जन पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करते है।
11. गौंड जनजाति मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, तेलंगाना, महाराष्ट्, उड़ीसा व आसाम में निवास करते है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक

1. टुण्ड्रा प्रदेशों में निवास करने वाली कौनसी जनजाति है?
   (अ) भील (ब) बुशमैन
   (स) एस्किमों (द) गौंड
2. दुर्गम पहाड़ी व पठारी क्षेत्रों में निवास करने वाली जनजाति कौनसी है?
   (अ) भील (ब) बुशमैन
   (स) पिग्मी (द) बद्दू
3 'कयाक' निम्नलिखित में से क्या है?
   (अ) मछली (ब) एस्किमों की नाव
   (स) बुशमैन का घर (द) भीलों का हथियार
4 एस्किमों का क्या अर्थ होता है?
   (अ) वन में रहने वाला आदमी
   (ब) कच्चा माँस खाने वाला आदमी
   (स) नग्न रहने वाला आदमी
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं
5 शुतुरमुर्ग के अण्ड़ों के खोल को बर्तन व आभूषण के लिए कौनसी जनजाति प्रयोग करती है?
   (अ) एस्किमों (ब) बुशमैन
   (स) पिग्मी (द) भील
6 बुशमैन जनजाति का सम्बन्ध कौनसी प्रजाति से है?
   (अ) निग्रटो (ब) मंगोलायड्स
   (स) काकेशस (द) आस्ट्रेलाइड्स
7 'गोल गाधेड़ों' प्रथा किस जनजाति में पाई जाती है?
   (अ) गौंड (ब) भील
   (स) सैमांग (द) सकाई
8 कोदू व कुटकी किस जनजाति के मुख्य खाद्यान्न है?
   (अ) गौंड (ब) भील
   (स) पिग्मी (द) बुशमैन
9 गौंडो से शासित साम्राज्य नहीं है –
   (अ) देवगढ़ (ब) माण्डला
   (स) चॉदा (द) राजगढ़
10 दिप्पा तथा पैण्डा कृषि निम्न में से किस जनजाति द्वारा की जाती है ?
   (अ) भील (ब) संथाल
   (स) गौंड़ (द) बुशमैन

अतिलघूत्तरात्मक

11. स्लेज क्या है ?
12. एस्किमों द्वारा बोली जाने वाली भाषा का नाम बताइए?
13. बेचुआनालैंड कहाँ स्थित है?
14. क्रोस क्या है?
15. शबरी का संबंध किस जनजाति से है ?
16. भीलों द्वारा पहाड़ी क्षेत्रों में की जाने वाली झूमिंग कृषि को क्या कहते है ?
17. गौंड जनजाति में पुजारी को किस नाम से जाना जाता है ?

लघूत्तरात्मक

18. एस्किमों के निवास क्षेत्र कौनसे हैं?
19. बुशमैन जनजाति की सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषताएँ बताइए?
20. भीलों के आवास का वर्णन कीजिए?
21. गौंड जनजाति की आर्थिक क्रियाकलापों पर टिप्पणी लिखिए।

निबन्धात्मक

22. एस्किमों जनजाति पर एक भौगोलिक लेख लिखिए।
23. भील जनजाति के निवास क्षेत्र, अर्थव्यवस्था व सामाजिक रीति–रिवाजों का वर्णन कीजिए?

आंकिक

24. विश्व के मानचित्र में एस्किमों व बुशमेन जनजाति के निवास क्षेत्र को दर्शाइए।
25. भारत के मानचित्र में भील व गौंड जनजाति के निवास क्षेत्र को दर्शाइए।

पाठ 03

जनसंख्या : वितरण, घनत्व एवं वृद्धि

(Population : Distribution, Density and Growth)

पृथ्वी पर मानव सभ्यता के विकास के साथ उसमें आयी जटिलताओं के कारण जनसंख्या का सर्वत्र समान वितरण नहीं मिलता है। प्रारम्भ से ही जनसंख्या वितरण क्षेत्रीय विस्तार लिए हुए है तथा राजनैतिक एवं प्रशासनिक इकाइयों की बढ़ती संख्या के कारण जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व का अध्ययन एक कठिन कार्य हो गया। मानव भूगोल में जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का विश्लेषण करना महत्त्वपूर्ण विषय बन गया है। पिछले कुछ दशकों में मानव भूगोल के अन्तर्गत जनसंख्या अध्ययन का भी महत्त्व बढ़ा है।

जनसंख्या वितरण और उसके घनत्व के प्रतिरूपों का विश्लेषण किसी क्षेत्र की जनांकिकीय विशेषताओं का आधार होता है। जनसंख्या वितरण का तात्पर्य है धरातल पर मनुष्य के फैलाव का स्वरूप कैसा है? जनसंख्या के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए जनसंख्या वितरण प्राथमिक महत्व रखता है।

मानव : एक संसाधन के रूप में

मानव भूगोल के अध्ययन में मानव का केन्द्रीय स्थान है, क्योंकि मानव ही अपने प्राकृतिक और सांस्कृतिक वातावरणों का उपयोग करता है, उनसे प्रभावित होता है और उनमें परिवर्तन करता है। भूमि, जल, मिट्टी, खनिज पदार्थ, वनस्पति और जन्तुओं का उपयोग मनुष्य ही करता है। मानव ही उत्पादन, कृषि, पशुपालन, निर्माण–उद्योग, व्यापार और परिवहन आदि आर्थिक क्रियाएँ करता है तथा सामाजिक संगठन, राजनीतिक प्रबन्ध और सांस्कृतिक विकास करता है। वह प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके संस्कृति का निर्माण करता है, इसलिये भूगोलवेत्ता के लिए पृथ्वी पर मानव का अध्ययन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

जनसंख्या का वितरण और घनत्व

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व को सामान्यतः एक ही अर्थ में समझा जाता है जबकि दोनों ही भिन्न संकल्पनाएँ हैं। जनसंख्या के वितरण में स्थानिक वितरण पर अधिक बल दिया जाता है अर्थात् पृथ्वी पर जनसंख्या के स्थितिगम पक्ष पर बल दिया जाता है। जिससे क्षेत्रीय प्रतिरूप को स्पष्ट किया जाता है। दूसरी ओर जनसंख्या घनत्व में जनसंख्या आकार एवं क्षेत्र के आनुपातिक सम्बन्धों पर बल दिया जाता है।

जनसंख्या वितरण से आशय जनसमूह के स्थानिक वितरण से है। इस पक्ष में मनुष्य के धरातल पर स्थिति जन्य प्रारूप का बोध होता है।

जनसंख्या घनत्व का तात्पर्य जनसंख्या एवं धरातल के एक अनुपात से है। यह जनसंख्या जमाव की मात्रा का मापन है। जिसे प्रति इकाई क्षेत्र व्यक्तियों की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है।

पृथ्वी पर जनसंख्या का वितरण अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है। समस्त भू–सतह पर जनसंख्या का वितरण समान रूप में नहीं पाया जाता है। विश्व की 80 प्रतिशत जनसंख्या केवल 20 प्रतिशत भू–भाग पर ही केन्द्रित है। शेष 20 प्रतिशत जनसंख्या

विषम परिस्थितियों वाले 80 प्रतिशत धरातल पर वितरित है। विश्व की जनसंख्या सन् 2001 में 6137 मिलियन अर्थात् 613.71 करोड़ थी। सन् 2013 में विश्व जनसंख्या 714 करोड़ हो गयी। यह जनसंख्या पृथ्वी के 13.6 करोड़ वर्ग किमी. स्थल क्षेत्र पर अत्यन्त असमान रूप से वितरित है।

विश्व जनसंख्या के असमान वितरण का प्रतिरूप

(1) पृथ्वी की दो तिहाई जनसंख्या उसके लगभग 14 प्रतिशत भाग पर निवास करती है। एक अन्य अनुमान के अनुसार विश्व की लगभग 57 प्रतिशत जनसंख्या इसके स्थलीय क्षेत्र के 5 प्रतिशत भाग पर निवास करती है।

(2) विश्व का दो–तिहाई भाग निर्जन प्रायः है। 90 प्रतिशत भू–भाग पर मात्र 10 प्रतिशत जनसंख्या रहती है। 10 प्रतिशत स्थलीय भाग पर कुल जनसंख्या का 90 प्रतिशत संकेन्द्रित है।

(3) विश्व की 85 प्रतिशत जनसंख्या उत्तरी गोलार्द्ध में तथा 15 प्रतिशत जनसंख्या दक्षिणी गोलार्द्ध में पाई जाती है।

(4) विश्व की लगभग तीन चौथाई जनसंख्या एशिया एवं यूरोप महाद्वीपों में रहती है। केवल एशिया महाद्वीप में ही विश्व की 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती है। ओशेनिया में विश्व जनसंख्या का मात्र आधा प्रतिशत ही पाया जाता है।

(5) विश्व की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या 20° से 60° उत्तरी अंक्षाशों के मध्य रहती है। 60° अक्षांश के उत्तर में विश्व की 1 प्रतिशत से भी कम जनसंख्या निवास करती है।

(6) विश्व की जनसंख्या का लगभग 75 प्रतिशत भाग महाद्वीपों के किनारों की ओर बसा है। महाद्वीपों के आन्तरिक भागों की ओर जनसंख्या का संकेन्द्रण घटता जाता है।

(7) विश्व की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या सागर तल में 500 मीटर की ऊँचाई तक के क्षेत्र में निवास करती है।

उक्त उल्लेखित तथ्यों से स्पष्ट है कि विश्व के कई अति विशाल क्षेत्र विरल आबाद है और कुछ अपेक्षाकृत रूप से छोटे क्षेत्र अत्यधिक सघन आबाद है।

विश्व जनसंख्या का वितरण

वर्तमान में विश्व की जनसंख्या सन् 2001 में 613.71 करोड़ थी। जिसका 75 प्रतिशत से अधिक भाग विकासशील देशों में तथा शेष भाग विकसित राष्ट्रों में निवास करता है। जनसंख्या सन्दर्भ ब्यूरों, वांशिगटन द्वारा सन् 2001 में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार एशिया की जनसंख्या 372 करोड़, अफ्रिका की 81.8 करोड़, यूरोप की रूस सहित 72.7 करोड़, दक्षिणी अमेरिका की 35.0 करोड़, उत्तरी अमेरिका की 49.4 करोड़ तथा ओसेनिया की 3.1 करोड़ थी।

संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2013 में विश्व की कुल जनसंख्या 714 करोड़ है, एशिया विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला महाद्वीप है जिसके अन्तर्गत विश्व की 60.27 प्रतिशत जनसख्या पाई जाती है। अफ्रीका एवं यूरोप में क्रमशः 15.41 और 10.37 प्रतिशत जनसंख्या का निवास है। इसके बाद उत्तरी अमेरिका (7.80%), दक्षिणी अमेरिका (5.62%) और ओसेनिया (0.53%) का स्थान है। विश्व में महाद्वीपों के अनुसार जनसंख्या का वितरण सारणी 3.1 एवं आरेख 3.1 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 3.1 : महाद्वीपों के अनुसार जनसंख्या वितरण (2013)

क्र.सं.	महाद्वीप	जनसंख्या (मिलियन)	विश्व ज.सं. का प्रतिशत
1	एशिया	4302	60.27
2	अफ्रोका	1100	15.41
3	यूरोप	740	10.37
4	उ. अमेरिका	557	7.80
5	द. अमेरिका	401	5.62
6	ओसेनिया	38	0.53
	कुल	7138	100.0

आरेख 3.1 : विश्व जनसंख्या (2013)

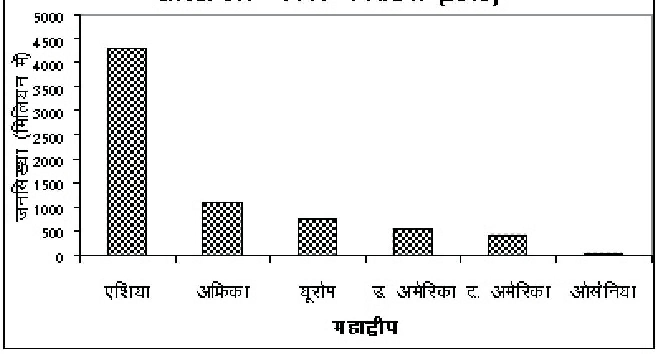

यदि जनसंख्या के वितरण को विभिन्न देशों के अनुसार देखें तो भी उनके क्षेत्रफल और जनसंख्या के वितरण में पर्याप्त विषमताएँ है। विश्व के कुछ बड़े राष्ट्र कम जनसंख्या वाले है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से कुछ छोटे देशों में जनसंख्या का जमाव

अधिक दिखाई देता है। जनसंख्या की दृष्टि से विश्व के कुछ बड़े देशों को सारणी संख्या 3.2 में प्रदर्शित किया गया है–

क्र.सं.	देश	जनसंख्या	
		2001	2013
1	चीन	1273	1357
2	भारत	1027	1276
3	संयुक्त राज्य अमेरिका	285	316
4	इण्डोनेशिया	206	248
5	ब्राजील	172	196
6	पाकिस्तान	145	191
7	रूस	140	144
8	बांग्लादेश	134	157
9	जापान	125	127
10	नाइजिरीया	127	174
11	मेक्सिको	100	118
12	जर्मनी	80	82
13	वियतनाम	79	90
14	फिलिपिन्स	77	96
15	मिश्र	70	85
16	टर्की	66	76
17	इथियोपिया	65	89
18	थाईलैण्ड	62	66
19	फ्रांस	59	64
20	ग्रेट ब्रिटेन	60	64
21	इटली	58	60
	विश्व	6137	7138

सारणी 3.2 को देखने से स्पष्ट होता है कि विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश चीन है जिसकी जनसंख्या सन् 2013 के अनुसार 1357 मिलियन है, जनसंख्या आकार की दृष्टि से भारत (1276 मिलियन) दूसरे स्थान पर तथा 316 मिलियन जनसंख्या के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका तीसरे स्थान पर आता है। इसके बाद इण्डोनेशिया (248 मिलियन) और ब्राजील (196 मिलीयन) का स्थान आता है।

विश्व जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि विकासशील एवं कम विकसित राष्ट्रों में रही है। जनसंख्या वितरण के स्थानिक दृष्टिकोण के अनुसार विश्व की 90 प्रतिशत जनसंख्या उत्तरी गोलार्द्ध में पायी जाती है।

विश्व को जनसंख्या के वितरण की दृष्टि से निम्न भागों में विभक्त किया जा सकता है। जिसे मानचित्र 3.1 में विश्व जनसंख्या के वितरण को दर्शाया गया है।

(1) सघन जनसंख्या के प्रदेश : विश्व के पाँच प्रदेश ऐसे हैं जहाँ सघन जनसंख्या निवास करती है। यहाँ जनसंख्या घनत्व भी अधिक है। इन प्रदेशों में पूर्वी एशिया के चीन, जापान, दक्षिणी कोरिया, ताइवान व हाँगकाँग, दक्षिणी एशिया के भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बाँग्लादेश व नेपाल एवं सम्पूर्ण दक्षिणी पूर्वी एशिया, उत्तरी–पश्चिमी यूरोप के ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम, फ्रांस, आयरलैण्ड, डेनमार्क, स्पेन व इटली तथा पूर्वी व उत्तरी अमेरिका के उत्तरी–पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण–पूर्वी कनाड़ा आदि देश प्रमुख है। उत्तरी अमेरिका में सन् 1779 की औद्योगिक क्रान्ति के उपरान्त जनसंख्या तीव्रता से बढ़ी है।

(2) सामान्य जनसंख्या के प्रदेश : ऐसे भौगोलिक प्रदेशों में पारिस्थितिकी जनसंख्या निवास के लिए सामान्य दशाएँ प्रदान करती है। यहाँ मानव ने अनेक स्थानों पर प्रकृति के साथ अनुकूलन भी किया जाता है। एण्डीज पर्वत पर प्रतिकूल भौतिक दशाओं के होते हुए भी ताम्बे की उपलब्धता के कारण चिली की चुकार्ड, कामरा, कनाडा के यूरेनियम शहर में यूरेनियम के कारण तथा पश्चिमी आस्ट्रेलिया में स्वर्ण के खनन के कारण सघन जनसंख्या पायी जाती है।

(3) विरल जनसंख्या के प्रदेश : ये प्रदेश विश्व के 70 प्रतिशत भू–भाग पर स्थित है। यहाँ विश्व की मात्र 5 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इन क्षेत्रों में स्थिति, उच्चावच एवं जलवायु की विषम परिस्थितियों के कारण जनसंख्या विरल पायी जाती है।

(4) अतिन्यून जनसंख्या क्षेत्र : विश्व के विशाल स्थल भाग पर बिना आबादी वाले या लगभग निर्जन प्रदेशों का मुख्य कारण जलवायु और धरातल की कठोरता है ऐसे क्षेत्रों में अतिशीतल, उष्ण मरूस्थल, उच्च धरातलीय, विषुवत रेखीय आर्द्रवन तथा मध्य अक्षांशीय मरूस्थलीय प्रदेश आते हैं। जहाँ अल्प

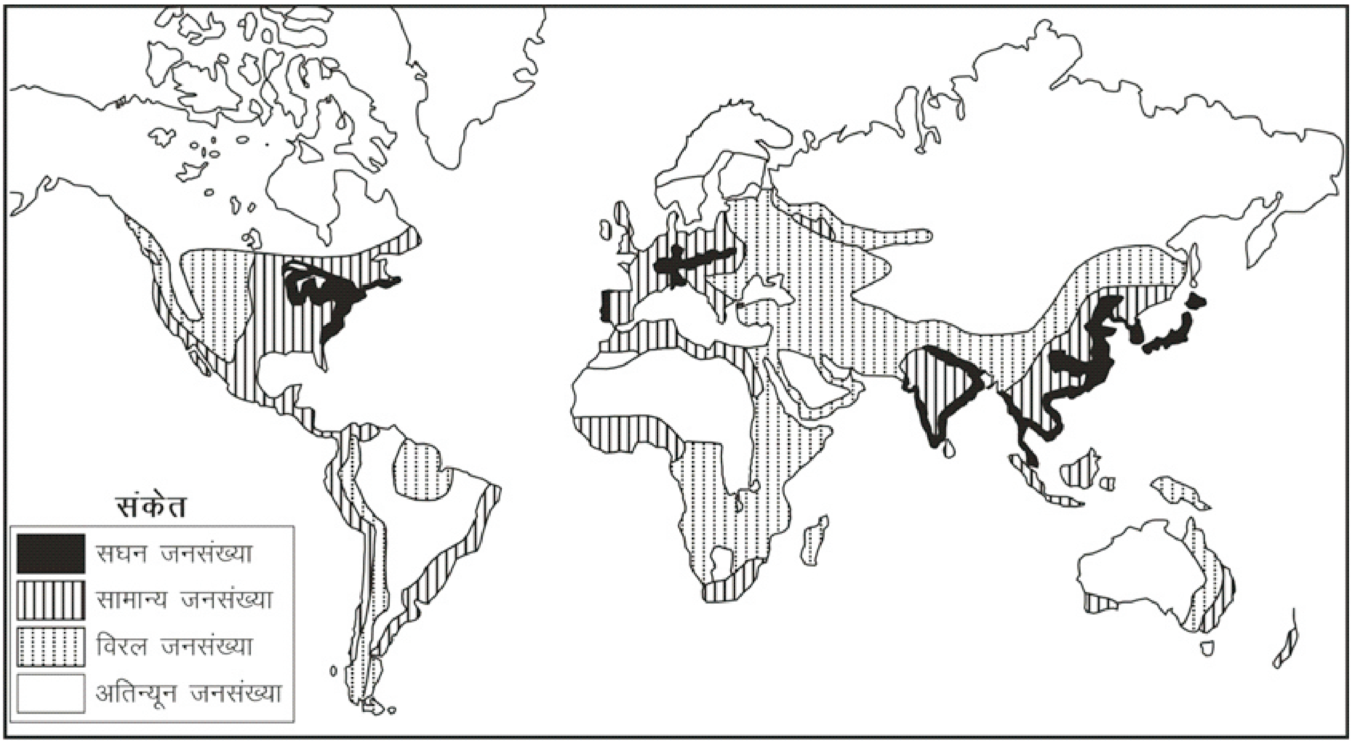

रेखाचित्र 3.1 : जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

विश्वव्यापी कारक
- अवस्थिति
- जलवायु दशा
- धरातल
- समुद्र तल से ऊँचाई

प्रादेशिक कारक
- भूमि की बनावट
- जल आपूर्ति
- मिट्टियाँ
- वनस्पति
- खनिज
- शक्ति संसाधन

साँस्कृतिक कारक
- आर्थिक अवस्था
- उन्नति का स्तर
- राजनैतिक स्थिति
- मनोवैज्ञानिक
- परिवहन
- व्यापार

सामायिक कारक
- वातावरण के अनुकूलन
- पारस्परिक निर्भरता
- धर्म
- सामाजिक मान्यताएँ
- सामाजिक संरचना

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

पृथ्वी पर जनसंख्या के वितरण में समय–समय पर परिवर्तन होता रहा है। वर्तमान वितरण की मुख्य विशेषता यह है कि पृथ्वी के स्थल–मण्डल पर मानव का निवास अति विषम है। जनसंख्या वितरण में अधिक विषमता के कई कारण है, परन्तु स्थल पर इसके वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों को रेखाचित्र 3.1 में प्रदर्शित किया गया है।

जनसंख्या महासमूह

विश्व में जनसंख्या वितरण के भौगोलिक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल जनसंख्या का लगभग 80 प्रतिशत भाग 20° उत्तरी अक्षांशों के मध्य मिलता है। पृथ्वी का 50 प्रतिशत भू–भाग मानव निवास के अनुकूल नहीं होने के कारण लगभग निर्जन है। इस प्रकार जनसंख्या का बड़ा भाग विश्व के चार विशाल क्षेत्रों में निवास करता है जो भौगोलिक दृष्टि से महाद्वीपों के कुछ विशेष उपयुक्त भाग है। इन विस्तृत बसे क्षेत्रों को प्रमुख जनसंख्या समूह कहते हैं। ये जनसंख्या महासमूह (1) एशियाई जनसमूह (2) यूरोपीय जनसमूह, (3) अमेरिकी जनसमूह (4) अफ्रीकी जनसमूह।

(1) एशियाई जनसमूह

विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या एशियाई जनसमूह में निवास करती है। इसका विस्तार पश्चिम में पाकिस्तान से लेकर भारत, म्यॉंनमार, थाईलेण्ड, इण्डोनेशिया, वियतनाम होते हुए चीन, जापान ओर कोरिया तक है। इस पूरे प्रदेश में मानसूनी जलवायु पायी जाती है। इसलिए इसे मानसून एशिया भी कहा जाता है। एशियाई जनसमूह को भी अध्ययन की दृष्टि से तीन उप प्रदेशों में (i) पूर्वी एशिया– चीन, जापान, कोरिया (ii) द.पूर्वी एशिया– थाईलेण्ड, म्यॉंनमार, इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स, वियतनाम, (iii) दक्षिणी एशिया, भारत, पाकिस्तान, बॉंग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका आदि में विभक्त किया जाता है।

एशियाई जनसमूह मुख्यतः 10° से 40° उत्तरी अक्षांशों के मध्य स्थित है। यहाँ पर नदियों द्वारा निर्मित ऊपजाऊ मिट्टी वाले अनेक मैदान स्थित है। जो उत्तम कृषि प्रदेश है। जापान को छोड़कर एशियाई जनसमूह के सभी देश कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाले है।

एशियाई जनसमूह के देशों की प्रमुख समस्या जनसंख्या वृद्धि की तीव्र दर है जो 2 प्रतिशत प्रति वर्ष से अधिक है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर ने रोजगार, आवास, भोजन, निर्धनता, चिकित्सा एवं शिक्षा आदि समस्याओं को बढ़ावा दिया है। सारणी 3.3 में एशियाई जनसमूह के प्रमुख देशों की जनसंख्या को प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 3.3 : एशियाई जनसमूह के देशों की जनसंख्या (2001 एवं 2013)

क्र. सं.	देश	वर्ष 2001		वर्ष 2013	
		जनसंख्या (करोड़ में)	विश्व का प्रतिशत	जनसंख्या (करोड़ में)	विश्व का प्रतिशत
1	चीन	127.3	20.74	135.7	19.0
2	भारत	102.7	16.87	127.7	17.9
3	इण्डोनेशिया	20.6	3.35	24.8	3.5
4	पाकिस्तान	14.5	2.36	19.1	2.7
5	बांग्लादेश	13.4	2.18	15.7	2.2
6	जापान	12.7	2.06	12.7	2.0
7	वियतनाम	7.9	1.28	9.0	1.1
8	फिलीपिन्स	7.7	1.25	9.6	1.3
9	थाईलैण्ड	6.2	1.01	6.6	0.9
10	कोरियागणराज्य	4.8	0.70	5.0	0.7
11	म्यांमार	4.7	0.77	5.3	0.7
12	मलेशिया	2.2	0.36	3.0	0.4
13	श्रीलंका	1.9	0.32	2.1	0.3

Source : Population Reference Bureau, Washington, D.C. 2013

(2) यूरोपीय जनसमूह

विश्व में एशिया के पश्चात् दूसरा बड़ा जनसमूह यूरोप महाद्वीप में है। सम्पूर्ण यूरोप में रूस सहित 74.0 करोड़ जनसंख्या केन्द्रित है जिसका 75 प्रतिशत भाग यूरोपीय जनसमूह के रूप में निवास करता है (सारणी 3.4)। इसमें सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश रूस के बाद जर्मनी हैं, जहाँ 8.20 करोड़ लोग रहते हैं। यूरोपीय जनसमूह 40° उत्तरी अक्षांशों से 60° उत्तरी अक्षांशों के मध्य पाया जाता है। इसकी सर्वाधिक सघनता 45° उत्तर में 55° उत्तर अक्षांशों के मध्य स्थित कोयला पेटी के सहारे हैं। यहाँ आधुनिक उद्योगों व नगरों का सर्वाधिक विकास हुआ है। 19वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में औद्योगिक क्रान्ति के बाद जनसंख्या का संक्रेन्द्रण नगरों के समीप हो सका है। इससे पहले यूरोप में जीवनयापन का मुख्य आधार कृषि थी। यूरोपीय जनसमूह के देशों में जन्म–दर और मृत्यु–दर दोनों ही कम है अतः जनसंख्या वृद्धि स्थिर अवस्था में है। जनसंख्या का उच्च घनत्व होते हुए भी जनसंख्या की अधिकता की समस्या नहीं है, अपितु कुछ देशों में तो जनसंख्या वृद्धि पर बल दिया जा रहा है।

सारणी 3.4 : यूरोपीय जनसमूह के प्रमुख देशों की जनसंख्या (2001 एवं 2013)

क्र. सं.	देश	वर्ष 2001		वर्ष 2013	
		जनसंख्या (करोड़ में)	विश्व का प्रतिशत	जनसंख्या (करोड़ में)	विश्व का प्रतिशत
1	रूस	14.04	2.00	14.44	2.00
2	जर्मनी	8.00	1.00	8.20	1.10
3	ग्रेट ब्रिटेन	6.0	0.90	6.40	0.90
4	फ्रांस	5.90	0.90	6.40	0.90
5	इटली	5.78	0.90	6.00	0.90
6	स्पेन	3.98	0.60	4.70	0.60
7	नीदरलैण्ड	1.60	0.20	1.70	0.20
8	पौलेण्ड	3.86	0.50	3.90	0.50
9	बेल्जियम	1.03	0.16	1.10	0.20
10	चेकोस्लाविकया	1.03	0.16	1.10	0.10
11	हंगरी	1.08	0.10	1.10	0.10

Source : Population Reference Bureau, Washington, D.C. 2013

यूरोपीय जनसमूह का 70 प्रतिशत से भी अधिक भाग नगरों में निवास करता है और विनिर्माण उद्योग, व्यापार, यातायात व अन्य सेवा कार्यों में संलग्न है। इन देशों की प्रति व्यक्ति आय अधिक और जीवन स्तर उच्च है। इस जनसमूह के सभी देश विकसित देशों की श्रेणी में आते हैं।

(3) अमेरिकी जनसमूह

अमेरिकी जनसमूह का मुख्य विस्तार उत्तरी अमेरिका के उत्तरी–पूर्वी भाग में है। यह विश्व का तीसरा बड़ा जनसमूह है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका का उत्तरी–पूर्वी भाग तथा कनाड़ा के पूर्वी तटीय क्षेत्र सम्मिलित है। यह विश्व का सबसे नवीन एवं विकसित जनसमूह है। जिसका विकास यूरोपीय जनसंख्या के प्रवास के उपरान्त हुआ है। इस जनसमूह की 80 प्रतिशत जनसंख्या 100° पश्चिमी देशान्तर के पूर्व में 30° उत्तर से 45° उत्तर अक्षांशों के मध्य निवास करती है। अमेरिकी जनसमूह की कुल जनसंख्या का 90 प्रतिशत यूरोप से आये लोग हैं। यह क्षेत्र आवागमन की सुविधा के साथ खनिज संसाधनों से सम्पन्न रहा था। यूरोपीय जनसंख्या प्रवास के साथ ही यूरोप में विकसित तकनीकी ज्ञान भी स्थानान्तरित हुआ जिसका प्रभाव यहाँ के विकास पर पड़ा। अमेरीकी जनसमूह की अधिकाँश जनसंख्या नगरीय है। लगभग 75 प्रतिशत लोग नगरों में रहते हैं। यह जनसमूह यूरोपीय जनसमूह से अधिक विकसित एवं सम्पन्न है। सारणी 3.5 में कुछ प्रमुख देखों की जनसंख्या प्रदर्शित है।

सारणी 3.5 : अमेरिकी जनसमूह के प्रमुख देशों की जनसंख्या (2013)

क्र. सं.	देश	वर्ष 2001		वर्ष 2013	
		जनसंख्या (करोड़ में)	विश्व का प्रतिशत	जनसंख्या (करोड़ में)	विश्व का प्रतिशत
1	रूस	14.04	2.00	14.44	2.00
2	जर्मनी	8.00	1.00	8.20	1.10
3	ग्रेट ब्रिटेन	6.0	0.90	6.40	0.90
4	फ्रांस	5.90	0.90	6.40	0.90
5	इटली	5.78	0.90	6.00	0.90
6	स्पेन	3.98	0.60	4.70	0.60
7	नीदरलैण्ड	1.60	0.20	1.70	0.20
8	पौलेण्ड	3.86	0.50	3.90	0.50
9	बेल्जियम	1.03	0.16	1.10	0.20
10	चेकोस्लाविकया	1.03	0.16	1.10	0.10
11	हंगरी	1.08	0.10	1.10	0.10

Source : Population Reference Bureau, Washington, D.C. 2013

अमेरिका जनसमूह में जनसंख्या वृद्धि नियन्त्रित है क्योंकि यहाँ जन्म दर एवं मृत्युदर दोनों पूर्णतः नियन्त्रित है तथा साथ ही बाहरी देशों से अप्रवास पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया है।

(4) अफ्रीकी जनसमूह

अफ्रीका महाद्वीप की जनसंख्या 2001 में 81.8 करोड़ थी। वर्ष 2013 के अनुसार अफ्रीका की कुल जनसंख्या 110 करोड़ है जो विश्व की 15.4 प्रतिशत है। आकार की दृष्टि से एशिया के बाद अफ्रीका का स्थान आता है। लेकिन इसका 70 प्रतिशत भाग मरूस्थलीय दशाओं व सघन वनों में आर्द्रता होने के कारण निर्जन प्रायः है। अफ्रीका के केवल 30 प्रतिशत भू–भाग पर ही जनसंख्या बसाव क्षेत्र है। इसका बड़ा संक्रेन्द्रण तीन क्षेत्रों में मिलता है। प्रथम नील नदी घाटी क्षेत्र, दूसरा क्षेत्र जाम्बिया एवं नाइजर नदी घाटियों के मध्य स्थित गिनी तट एवं तीसरा क्षेत्र दक्षिणी अफ्रीका का दक्षिणी तथा पूर्वी तटीय भाग है। सारणी 3.6 में अफ्रीकी जनसमूह के प्रमुख देशों की जनसंख्या प्रदर्शित की गई है।

सारणी 3.6 : अफ्रीकी जनसमूह के प्रमुख देशों की जनसंख्या (2013)

क्र.सं.	देश	जनसंख्या (मिलियन में)	विश्व का प्रतिशत
1	नाइजीरिया	174	2.4
2	इथोपिया	89	1.2
3	मिश्र	85	1.2
4	द. अफ्रीका	53	0.7
5	तंजानिया	49	0.7
6	सूडान	34	0.5
7	कीनिया	44	0.6
8	अल्जीरिया	38	0.5
9	मौरक्को	33	0.5
10	यूगाण्डा	37	0.5

Source : Population Reference Bureau, Washington, D.C. 2013

जनसंख्या घनत्व (Population Density)

किसी प्रदेश में निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या और प्रदेश के क्षेत्रफल के पारस्परिक अनुपात से जनसंख्या का घनत्व मालूम होता है। यह घनत्व इस प्रदेश की उन्नति और भावी विकास के अनुमान लगाने में मुख्य आधार होता है। प्रत्येक प्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों जैसे कि क्षेत्रफल, वहाँ की मिट्टियाँ, खनिज पदार्थ जलीय संसाधन, वन–सम्पदा, आदि की मात्रा सीमित होती है। उन संसाधनों को कितने मुनष्य प्रयोग करते हैं? अर्थात् कितनी जनसंख्या अपने जीवन–निर्वाह के लिये उन संसाधनों पर आधारित है। यह तथ्य उस जनसंख्या के रहन–सहन के स्तर को तथा उनके आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की सीमा को निर्धारित करता है। इसलिए प्रत्येक देश की आर्थिक उन्नति तथा सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति की योजना बनाने के लिए उस प्रदेश की जनसंख्या की सघनता की भावना बहुत जरूरी है।

जनसंख्या घनत्व के प्रकार

जनसंख्या के विभिन्न पहलूओं का अध्ययन करने के लिए घनत्व को मुख्य आधार बनाया जाता है। जनसंख्या घनत्व भी कई प्रकार के हो सकते हैं। प्रत्येक पहलू अपनी तरह से जनसंख्या के विश्लेषण में सहयोगी होता है अतः उनकी संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है –

(1) गणितीय घनत्व : जिसमें मानव–स्थल–अनुपात का विचार किया जाता है। इसे निम्न सूत्र से ज्ञात किया जाता है।

जनसंख्या ÷ कुल क्षेत्रफल

(2) आर्थिक घनत्व : जिसमें उस प्रदेश के संसाधनों की उत्पादन क्षमता और उस प्रदेश में निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या का विचार किया जाता है, इसे ज्ञात करने का सूत्र इस प्रकार है

जनसंख्या ÷ संसाधन

(3) कार्यिक घनत्व : कार्यिक घनत्व या कृषि क्षेत्रीय घनत्व, जिसमें उस प्रदेश की खेती की जाने वाली भूमि और निवास करने वाले मनुष्यों की समस्त जनसंख्या का विचार किया जाता है।

जनसंख्या + कृषि भूमि क्षेत्र

(4) कृषि घनत्व : जिसमें कृषि की जाने वाली भूमि के क्षेत्रफल और उनमें निवास करने वाली कृषक जनता का विचार किया जाता हैं। यह बात ध्यान देने की है कि इसमें प्रदेश की समस्त जनसंख्या कानहीं वरन् केवल कृषि में लगी हुई जनसंख्या का उपयोग किया जाता है।

कृषक जनसंख्या ÷ कृषि भूमि क्षेत्रफल

(5) पोषण घनत्व : जिसमें खेती की भोज्य–फसलों के क्षेत्रफल का और उस प्रदेश की समस्त जनसंख्या का विचार किया जाता है।

जनसंख्या ÷ भोज्य फसलों का क्षेत्रफल

प्रत्येक प्रकार के जनसंख्या घनत्व का उपयोग अलग–अलग उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। भूगोल में गणितीय घनत्व का बहुतायात में प्रयोग किया जाता है। यह सामान्यतः प्रति वर्ग किमी. में रहने वाले व्यक्तियों के रूप में ज्ञात जाता है।

जनसंख्या का घनत्व = जनसंख्या / क्षेत्रफल

उदाहरण के लिए 'n' प्रदेश का क्षेत्रफल 100 वर्ग किमी है और जनसंख्या 150,000 है। जनसंख्या का घनत्व इस प्रकार निकाला जाएगा।

$$\text{घनत्व} = \frac{150000}{100}$$

घनत्व = 1500 व्यक्ति / किमी.

विश्व में जनसंख्या के घनत्व का वितरण

विश्व में जनसंख्या के घनत्व का वितरण भी जनसंख्या के वितरण के अनुरूप ही असमान एवं विषम प्रकृति का है। विश्व में जिन स्थानों पर अधिक जनसंख्या का बसाव है, वहाँ जनघनत्व स्वाभाविक रूप से अधिक पाया जाता है। विश्व स्तर पर जनसंख्या घनत्व में भारी विषमता पायी जाती है। एक ओर सहारा, ग्रीनलैण्ड, साइबेरिया व मंगोलिया में एक व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. से कम जनसंख्या है। जबकि दूसरी और सिंगापुर में 7797 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी निवास करते हैं। विश्व जनसंख्या ब्यूरो वांशिगटन के अनुसार 2015 में विश्व का जनसंख्या घनत्व 47 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। लेकिन इसमें क्षेत्रीय असमानता मिलने के कारण एशिया में 116 व्यक्ति, यूरोप में 32 व्यक्ति, अफ्रिका में 27 व्यक्ति, उत्तरी अमेरिका में 16 व्यक्ति, दक्षिणी अमेरिका में 20 व्यक्ति तथा ओसेनिया में 3 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी जनसंख्या का घनत्व था। सारणी 3.7 में उच्च, मध्यम और अल्प जनसंख्या घनत्व के देशों को बताया गया है।

सारणी 3.7 : विश्व में कुछ चयनित देशों का जनसंख्या घनत्व, 2013

क्र.सं.	देश	व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.
1	बांग्लादेश	1088
2	दक्षिण कोरिया	506
3	रूवाण्डा	422
4	नीदरलैण्ड	405
5	भारत	388
6	बेल्जियम	367
7	जापान	337
8	श्रीलंका	312
9	फिलीपिन्स	321
10	एलसाल्वेडोर	299
11	वियतनाम	272
12	ग्रेट ब्रिटेन	263
13	रोमानिया	90
14	मलेशिया	90
15	कम्बोडिया	80
16	दक्षिणी अफ्रिका	43
17	सं. राज्य अमेरिका	33
18	ब्राजील	23
19	कनाडा	04
20	आस्ट्रेलिया	03

Source : Population Reference Bureau, Washington, D.C. 2013

जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से विश्व को पाँच प्रमुख भागों में विभक्त किया जा सकता है (मानचित्र 3.2)।

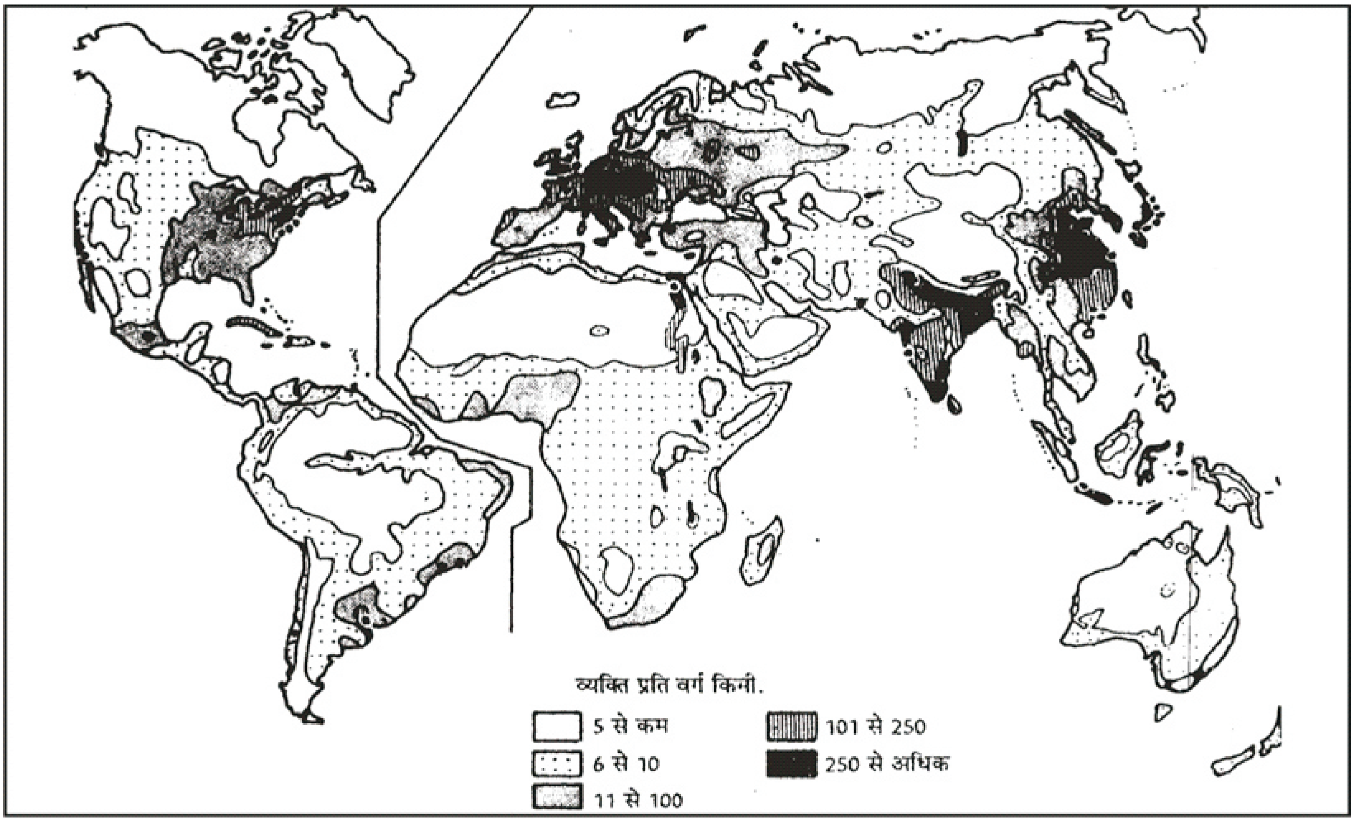

मानचित्र 3.2 : विश्व जनसंख्या धनत्व

(1) अत्यधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र : विश्व में वे देश जहाँ जनघनत्व 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से अधिक पाया जाता है, अधिक जनघनत्व वाले क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। इसके अन्तर्गत विश्व के तीन जनसंख्या समूहों को सम्मिलित किया जाता है (i) पूर्वी, दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी एशिया, (ii) पश्चिमी एवं मध्यवर्ती यूरोप, (iii) पूर्वी उत्तरी अमेरिका।

इन प्रदेशों में स्वास्थ्यप्रद जलवायु, समतल मैदानी भू–भाग, उपजाऊ मृदा, जल, खनिज सम्पदा, औद्योगिक विकास, परिवहन साधनों के साथ अनुकूल दशाओं के कारण उच्च जनघनत्व पाया जाता है।

एशिया के सागर तटीय भागों, यूरोप की औद्योगिक मेखला अधिक जनघनत्व वाले क्षेत्र के औद्योगिक, व्यापारिक केन्द्रों में क्रमशः 1500, 2500 तथा 4000 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी का जनघनत्व पाया जाना सामान्य बात है।

(2) अधिक जनघनत्व वाले क्षेत्र : विश्व के ऐसे क्षेत्र जहाँ जनघनत्व 100–250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. पाये जाते हैं वे इसके अन्तर्गत आते हैं, सामान्यतः अधिक जनघनत्व वाले क्षेत्रों के सीमान्त भागों में मध्यम जनघनत्व के क्षेत्र विस्तृत है। दक्षिणी, दक्षिणी–पूर्व एवं पूर्वी यूरोप, मध्य उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका के तटवर्ती भाग, अफ्रीका के तटवर्ती भाग, दक्षिण पूर्व, एशिया के आन्तरिक भाग, उत्तरी–पश्चिमी चीन, मध्यवर्ती भारत, दक्षिणी आस्ट्रेलिया आदि इस वर्ग में आते हैं।

(3) सामान्य जनघनत्व वाले क्षेत्र : विश्व के वे क्षेत्र जहाँ घनत्व 10–100 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है कम जन घनत्व वाले क्षेत्र है। अस्थाई कृषि, पशुचारण, वानिकी, मरूस्थलों के निकट कृषि वाले क्षेत्रों में जनघनत्व कम पाया जाता है। इसके अन्तर्गत एशिया, अफ्रिका तथा उत्तरी– दक्षिणी अमेरिका के विस्तृत घास के मैदान सम्मिलित किये जाते हैं।

(4) कम जनघनत्व वाले क्षेत्र : विश्व के वे क्षेत्र जहाँ जनघनत्व 1–10 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है अत्यन्त कम जनघनत्व वाले क्षेत्र है। अफ्रिका में सूडान, लीबिया, मालागासी, उत्तरी अमेरिका में कनाडा, दक्षिणी अमेरिका में उत्तरी अर्जेण्टाइना, पेरू, इक्वेडोर, एशिया में पश्चिमी साइबेरिया, बोननियो, खाड़ी के देशों में कम जनघनत्व पाया जाता है।

(5) प्रायः जनविहीन क्षेत्र : विश्व के वे क्षेत्र जहाँ जन घनत्व 1 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से भी कम पाया जाता है। पृथ्वी के स्थल भाग का 70 प्रतिशत आवास्य क्षेत्र है जिसे इस वर्ग के अर्न्गत रखा जाता है। विश्व के अतिशीतल प्रदेश, अति उष्णआर्द्र प्रदेश,

अतिशुष्क प्रदेश तथा उच्च पर्वतीय प्रदेश प्रायः जन विहीन क्षेत्र है।

जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक

विश्व जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को समझने के पश्चात् यह ध्यान में आता है कि कुछ ऐसे कारक है जो मानव के बसाव को नियन्त्रित करते हैं। जनसंख्या की उपलब्धता और उसके जमाव को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारकों का विवरण इस प्रकार है–

(अ) भौतिक कारक

(i) स्थिति : जनसंख्या वितरण पर विश्व के विभिन्न क्षेत्र की स्थिति का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। विश्व की अधिकाँश जनसंख्या शीतोष्ण कटिबन्धीय प्रदेशों में निवास करती है। लोग समतल मैदानों और मंद ढालों पर बसने को वरीयता देते हैं। पर्वतीय और पहाड़ी क्षेत्र परिवहन के विकास में बाधक होते हैं इसलिए प्रारम्भ से कृषि और औद्योगिक विकास के लिए अनुकूल नहीं होते हैं। अतः इन क्षेत्रों में कम जनसंख्या पायी जाती है।

(ii) जल की उपलब्धता : लोग उन क्षेत्रों में बसना चाहते है, जहाँ जल आसानी से उपलब्ध होता है, यहीं कारण है कि विश्व की महान नदी–घाटियाँ विश्व के सबसे सघन बसे हुए क्षेत्र है।

(iii) जलवायु : अति ऊष्ण अथवा ठण्डे मरूस्थलों की विषम जलवायु मानव बसाव के लिए असुविधाजनक होती है। अधिक वर्षा अथवा विषम जलवायु क्षेत्रों में कम जनसंख्या पाई जाती है। भूमध्य सागरीय प्रदेश सुखद जलवायु के कारण ही प्रारम्भिक काल से बसे हुए क्षेत्र हैं।

(iv) मृदाएँ : उपजाऊ मृदाएँ कृषि तथा इससे सम्बन्धित क्रियाओं के लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए उपजाऊ दोमट मिट्टी वाले प्रदेशों में अधिक लोग निवास करते है क्योंकि ये मृदाएँ गहन कृषि का आधार बनती है।

(ब) आर्थिक कारक

(i) खनिज : खनिज निक्षेपों से युक्त क्षेत्र उद्योगों को आकृष्ट करते हैं। खनन और औद्योगिक गतिविधियाँ रोजगार उत्पन्न करती है। अतः अकुशल तथा कुशल कर्मी इन क्षेत्रों में पहुँचते हैं और जनसंख्या को सघन बना देते हैं। अफ्रिका की कटंगा, ताम्बा पेटी इसका एक अच्छा उदाहरण है।

(ii) नगरीकरण : नगर रोजगार के बेहतर अवसर, शैक्षणिक व चिकित्सा सुविधाएँ तथा परिवहन और संचार के बेहतर साधन प्रस्तुत करते हैं। अच्छी नगरीय सुविधाएँ तथा नगरीय जीवन का आकर्षण लोगों को नगरों की ओर खींचते हैं।

(iii) औद्योगीकरण : औद्योगीकरण, बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करता है। इनमें केवल कारखानों के श्रमिक ही नहीं होते बल्कि परिवहक परिचालक, दुकानदार, बैंककर्मी, डॉक्टर, अध्यापक तथा अन्य सेवाएं उपलब्ध कराने वाले भी होते हैं। जापान का कोबे–ओसाका प्रदेश अनेक उद्योगों की उपस्थिति के कारण सघन बसा हुआ है।

(iv) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक : कुछ स्थान धार्मिक अथवा सांस्कृतिक महत्व के कारण अधिक लोगों को आकर्षित करते हैं। ठीक इसी प्रकार लोग उन क्षेत्रों को छोड़कर चले जाते हैं जहाँ सामाजिक और राजनैतिक अशान्ति होती है। कई बार सरकारें लोगों को विरल जनसंख्या वाले क्षेत्र में बसने अथवा भीड़–भाड़ वाले स्थानों में चले जाने के लिए प्रोत्साहन देती है।

जनसंख्या वृद्धि

किसी भौगोलिक क्षेत्र की जनसंख्या के आकार में एक निश्चित समय में होने वाले परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहा जाता है। वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर पर मुख्यतः जनसंख्या वृद्धि ही दृष्टिगत होती है जिसके कारण जनसंख्या परिवर्तन ही जनसंख्या वृद्धि का पर्याय माना जाने लगा है। जनसंख्या परिवर्तन में धनात्मकता या ऋणात्मकता पर ध्यान नहीं दिया जाता है वरन् इसे कुल संख्या के रूप में मापा जाता है। जनसंख्या वृद्धि को कुल संख्या अथवा प्रतिशत दोनों के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

जनसंख्या की कुल वृद्धि अथवा निरपेक्ष वृद्धि को ज्ञात करने के लिए विगत जनगणना वर्ग अथवा जनगणना की जनसंख्या को वर्तमान जनगणना वर्ष अथवा जनगणना की संख्या में से घटाया जाता है जैसे–

सारणी 3.8 : भारत की जनसंख्या (करोड़ में)

जनगणना वर्ष		निरपेक्ष वृद्धि
2011	2001	
121.01	102.7	18.3

जनसंख्या का प्रतिशत मूल्य ज्ञात करने के लिए निरपेक्ष वृद्धि को विगत वर्ष की अथवा जनगणना की जनसंख्या से भाग देकर 100 से गुणा कर दिया जाता है, जैसे पिछले उदाहरण के ही क्रम है–

$$\frac{18.3}{102.7} \times 100 = 17.81\%$$

इस प्रकार वार्षिक वृद्धि दर 17.81 / 10 = 1.781 प्रतिशत अथवा लगभग 1.78 प्रतिशत वृद्धि हुई।

विश्व जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या में स्थानिक सम्बद्धता के साथ निरन्तर वृद्धि होती रही है। प्रागैतिहासिक काल में जनसंख्या में वृद्धि अत्यन्त धीमी गति से हुई, जिसके लिए विषम जलवायु दशाओं, धुमक्कड़ी जीवन व अल्पपोषण आदि को उत्तरदायी माना गया है। प्रकृति में मानव द्वारा पशुपालन एवं पौधों को घरेलू बनाये जाने के साथ ही वृद्धि का दौर प्रारम्भ हुआ। कृषि विकास के कारण खाद्य आपूर्ति निश्चित हुई जिससे पर्याप्त पोषण प्राप्त हो सका। समय के साथ मानव जीवन विभिन्न जलवायु दशाओं के अनुसार अनुकूलित होने लगा। फलस्वरूप मानव ने विषम जलवायु परिस्थितियों को सहन करने की क्षमता विकसित की।

जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ

पृथ्वी पर मानव का उद्भव काल अप्रामाणिक सा है। प्रागैतिहासिक काल में जनसंख्या एवं जनसंख्या वृद्धि के किसी प्रकार के प्रत्यक्ष साक्ष्य नहीं है। अठारहवी शताब्दी से पूर्ववर्ती काल में विश्व की जनसंख्या की गणना भी अनुमानों पर अधिक निर्भर करती है। ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी पर मानव का आविर्भाव लगभग दस लाख वर्ष पूर्व हुआ था तथा तब पृथ्वी पर जनसंख्या कुछ हजार ही थी। जनसंख्या वृद्धि के अध्ययन को निम्न कालक्रम में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) प्रागैतिहासिक काल : इस काल का प्रारम्भ भोजन संग्रह एवं आखेट व्यवस्था से माना जाता है। आखेट एवं भोजन संग्रह पुरा पाषाण काल में स्थलीय भागों पर ही होता था। महाद्वीपों पर बर्फ का कम होने के उपरान्त अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी यूरोप तथा दक्षिणी पश्चिमी व पूर्वी एशिया में मानवीय विस्तार का अनुमान लगाया जाता है। अमेरिकी भूमि पर मानवीय उपस्थिति से पूर्व पृथ्वी पर कुल 33 लाख लोग रहते थे जो बढ़कर 15 हजार वर्ष के उपरान्त लगभग 53 लाख हो गये। जिस आधार पर अनुमान लगाया जाता है कि इस समय संसार का औसत घनत्व 0.04 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है।

(2) प्राचीन काल : आज से लगभग छः हजार वर्ष पूर्व विश्व के कुछ सीमित भागों में मनुष्य ने कृषि और पशु पालन आरम्भ किया। इस प्रकार विश्व के कई भागों में मानव सभ्यता का विकास हो चुका था और नदी–घाटियों में कृषि के साथ ही नगरीय विकास भी प्रारम्भ हुआ। ईसा काल के आरम्भ में विश्व की कुल जनसंख्या 20 से 30 करोड़ के मध्य होने का अनुमान लगाया जाता है। इस दृष्टि से भारतीय उपमहाद्वीप में पूर्वी एशिया, यूनानी और रोमन साम्राज्यों मेसोपोटामिया और मिश्र के साथ–साथ सिन्धु सरस्वती सभ्यता विशाल जनसमूह के क्षेत्र थे।

सारणी 3.9 : विश्व में जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	जनसंख्या
10,.000 वर्ष ईसा पूर्व (B.C.)	50 लाख
1 ई. (A.C.)	2000 लाख
1000 ई.	3000 लाख
1750 ई.	8000 लाख
1850 ई.	100 करोड़
1930 ई.	200 करोड़
1962 ई.	300 करोड़
1975 ई.	406 करोड़
1987 ई.	500 करोड़
1999 ई.	600 करोड़
2000 ई.	610 करोड़
2010 ई.	710 करोड़
2013 ई.	714 करोड़
2015 ई.	720 करोड़
2025 ई.	781 करोड़
2050 ई.	903 करोड़

Source : According to UN Bstination Source : World Development Reports 2000 and Population Reference Burea, USA 2013.

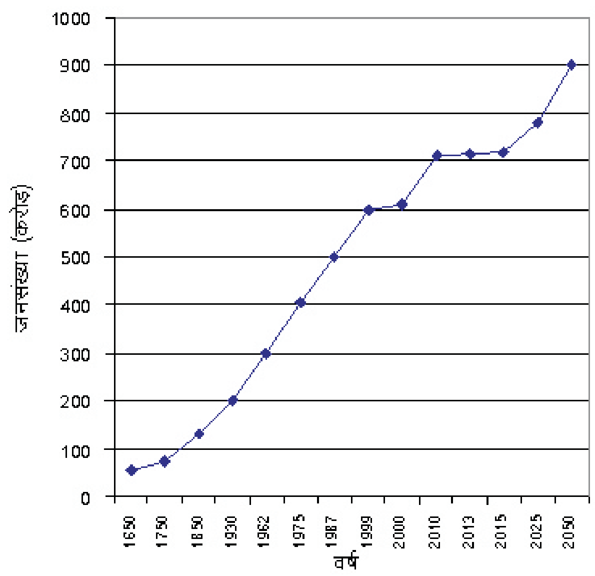

आरेख 3.2 : विश्व–जनसंख्या वृद्धि

(3) मध्य काल : इतिहास की दृष्टि से यह 700 ईस्वी से 1650 ईस्वी के बीच का काल खण्ड है। 1650 ईस्वी में विश्व की कुल जनसंख्या 55 करोड़ थी। इस समय जनसंख्या वृद्धि की गति अत्यन्त मन्द रही, किन्तु कुछ देशों में अधिक रही। इस

समय बाढ़, सूख, महामारी और युद्धों के कारण जनसंख्या में कमी हुई।

(4) आधुनिक काल : 17वीं शताब्दी के मध्य से आधुनिक काल का प्रारम्भ माना जाता है। 1650 ईस्वी में विश्व की कुल जनसंख्या 55 करोड़ थी। 1750 ईस्वी में यह बढ़कर 72 करोड़ हो गई। 1850 ईस्वी में यह दुगुनी वृद्धि के साथ 133 करोड़ हो गई। 1950 ईस्वी तक विश्व की जनसंख्या 251 करोड़ हो गई। 2000 में 610 करोड़ तथा 2013 में 714 करोड़ तक पहुँच गई। विश्व की जनसंख्या की वृद्धि को सारणी 3.9 तथा आरेख 3.2 में दर्शाया गया है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण

विश्व में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों से ज्ञात होता है कि सभी महाद्वीपों में जनसंख्या वृद्धि हुई किन्तु जनसंख्या की वृद्धि की दर सभी महाद्वीपों में एक समान नहीं है। पृथ्वी पर मानवीय अस्तित्व के 99 प्रतिशत काल में जनसंख्या अत्यन्त कम तथा वृद्धि दर अत्यन्त मन्द रही है, किन्तु पिछले 350 वर्षों में विश्व की जनसंख्या उच्च वृद्धि दर के साथ बढ़ी है। विगत पचास वर्षों में विश्व के अनेक देश जनसंख्या की विस्फोटक स्थिति में पहुँच गये है। जनसंख्या वृद्धि के लिए उत्तरदायी कारक निम्नलिखित है।

(i) मृत्युदर में गिरावट : विश्व में जनसंख्या वृद्धि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण मृत्युदर पर नियन्त्रण है। विगत पचास वर्षों में वैज्ञानिक उपलब्धियों तथा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार के कारण संक्रामक रोगों तथा महामारियों पर सफलतापूर्वक नियन्त्रण से मृत्युदर में भारी गिरावट आई है।

(ii) खाद्य पदार्थों की निश्चित आपूर्ति : विश्व में खाद्यान्नों तथा अन्य खाद्य पदार्थों की निश्चित एवं नियमित आपूर्ति से जनसंख्या की वृद्धि दर प्रभावित हुई है। यांन्त्रिक एवं गहन कृषि, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, उन्नत खाद–बीज के उपयोग आदि में कृषि उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई है। अकालों की संख्या भी अत्यन्त कम हुई है।

(iii) औद्योगिक विकास : औद्योगिक क्रान्ति के कारण खनन ऊर्जा, उत्पादन, उद्योग, परिवहन, व्यापार, तकनीक, आदि सभी क्षेत्रों का बहुमुखी विकास हुआ है, जिसमें रोजगार के माध्यम बढ़े हैं। मनुष्य के सामान्य जीवन स्तर में सुधार आया है।

(iv) वैज्ञानिक तथा प्राविधिक प्रगति : नवीन आविष्कारों ने मानव जीवन को आरामदायक तथा सुविधाओं से परिपूर्ण बनाने से जनसंख्या में वृद्धि हुई है।

(v) शान्ति और सुरक्षा : शान्ति और सुरक्षा की स्थापना से विश्व में सामान्य प्रगति का विस्तार हुआ है तथा जनसंख्या में वृद्धि होती रही है।

(vi) प्रवास : मृत्यु दर की तुलना में उच्च जन्मदर के कारण जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगी तथा यूरोपीय निवासियों ने बड़े पैमाने पर उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया की ओर प्रवास आरम्भ किया। अतः इन महाद्वीपों में प्रवास के कारण जनसंख्या वृद्धि हुई।

जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति विभिन्न महाद्वीपों में की तुलना संसार के सभी महाद्वीपों में जनसंख्या की वृद्धि होती रही है, परन्तु किसी महाद्वीप में जनसंख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ी है और किसी में धीमी गति से है। जनसंख्या वृद्धि की मुख्य विशेषतायें निम्न प्रकार है–

(i) सन् 1650 से 1750 तक एशिया और यूरोप में साधारण वृद्धि हुई थी और अफ्रिका में जनसंख्या घट गई थी। तब तक उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका में बहुत अल्प जनसंख्या थी।

(ii) सन् 1750 से 1900 तक सभी महाद्वीपों में जनसंख्या वृद्धि हुई, परन्तु अधिक वृद्धि एशिया, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में हुई थी।

(iii) सन् 1900 के पश्चात् 20वीं शताब्दी में जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत तीव्र गति से बढ़ी है। सबसे अधिक वृद्धि उत्तरी अमेरिका और एशिया में हुई है, पिछले 80 वर्षों में एशिया की जनसंख्या दो गुनी हो गई है और उतरी अमेरिका की लगभग 4 गुनी हो गई है। यूरोप में जनवृद्धि कम होने लगी है।

(iv) जनसंख्या वृद्धि पिछले सब महाद्वीपों में एक समान नहीं है। समस्त संसार की जनसंख्या तीन शताब्दियों में लगभग 7 गुनी हो गई है। एशिया और यूरोप में तीन शताब्दी पूर्व भी संसार की लगभग 3/4 जनसंख्या रहती थी और अब भी संसार की लगभग 3/4 है।

(v) परन्तु उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में अब बहुत अधिक वृद्धि हुई है। उत्तरी अमेरिका में तीन शताब्दियों में जनसंख्या बढ़कर 364 गुनी हो गई। दक्षिणी अमेरिका में 14 गुनी हो गई है, सबसे कम वृद्धि अफ्रीका में हुई है जो केवल तीन गुनी है।

जनसंख्या समस्या और समाधान

दिन–प्रतिदिन संसार में जनसंख्या की समस्या अधिकाधिक गंभीर होती जा रही है, और सभी विकसित देश इस विषय में चिन्तित होने लगे हैं–

(i) अत्यन्त तीव्र और भयावह वृद्धि : वर्तमान काल में संसार की जनसंख्या में अत्यन्त तीव्र गति से वृद्धि हो रही है, जैसे पहले कभी नहीं हुई थी। यदि इस दर में वृद्धि होती रही तो 2040 ई. में विश्व जनसंख्या 1400 करोड़ हो जायेगी।

(ii) सीमित संसाधन : जिन प्राकृतिक संसाधनां से